Tc.No. : GUJHIN00722

पेजः 4, मुल्य 1 रु.

दैनिक

क्रांति समय

संस्थापक / संपादक : सुरेश मौर्या

E-mail: krantisamay@gmail.com, www.krantisamay.com

वर्षः 2 अंकः 183 , 08 दिसम्बर, शुक्रवार 2017, सूरत, हिन्दी दैनिक मो. 9879141480

4 ओ ब्लॉक आगम नवकार कॉम्पलेक्ष, सचीन रेल्वे स्टेशन के पास, सूरत-गुजरात

सार समाचार

बसपा सांसद और पूर्व चेयरमैन समर्थकों में संघर्ष, कई घायल

मेरठ। किठौर कस्बे में मुख्य बाजार में विवादित दुकान पर कब्जे को लेकर बसपा सांसद मुनकाद अली और पूर्व चेयरमैन मतलूब गौड़ के समर्थकों में संघर्ष हो गया। दोनों गुटों में लाठी-डंडे व लोहे के सरिए चले। वहीं फायरिंग भी की जिससे बाजार में भगदड़ मच गई। पुलिस ने लाठियां भांजकर भीड़ को खदेड़ हालात पर काबू पाया। इस घटना में बसपा सांसद के दो पुत्र सहित दोनों पक्षों के आठ से ज्यादा लोग घायल हो गए। सूचना पर एसपी देहात व उपजिलाधिकारी बवाना अंकुर श्रीवास्तव भी वहां पहुंच गये। कस्बे में फिलहाल तनाव का माहौल है, पुलिस एवं प्रशासनिक अफसर डेरा डाले हैं। किठौर कस्बे में मुख्य बाजार में एक दुकान पर स्वामित्व को लेकर फारूख उर्फ फखरू और खिज्जर में विवाद चल रहा है। इनमें फारूख पूर्व नगर पंचायत चेयरमैन मतलूब गौड़ का भाई है, जबकि खिज्जर बसपा सांसद मुनकाद अली का समर्थक है। बताया गया कि दुकान के स्वामित्व का विवाद थाने पहुंचा और बुधवार को थाने में थाना प्रभारी राजेन्द्र त्यागी की मौजूदगी में दोनों पक्षों में सुलह वार्ता चल रही थी। काफी जद्दोजहद के बाद भी दोनों पक्ष जिद पर अडिग रहे। पूर्वाह्न बसपा सांसद के दो पुत्र सलमान व फरमान वहां पहुंचे तब वहां मौजूद पूर्व चेयरमैन मतलूब गौड़ के साथ उनकी तीखी झड़प तक हुई। इसी बीच सांसद के पुत्र यह कहकर अपने समर्थकों के साथ थाने से चले गये कि वह दुकान पर कब्जा करेंगे हम देखेंगे कौन रोकेगा। तभी मतलूब गौड़ के साथ रहे लोगों ने फोन पर समर्थकों से संपर्क कर दुकान पर पहुंचने को कहा। दोनों गुटों के लोग थाने से चले तब पुलिसकर्मियों ने उन्हें रोकने का प्रयास किया मगर वह असहाय नजर आये। थाना प्रभारी राजेन्द्र त्यागी पुलिस बल के साथ उनके पीछे दौड़े। मुख्य बाजार में पहुंचकर दोनों पक्षों के लोग आमने-सामने आ गये इसी बीच वह लाठी डंडे व लोहे के सरिये लेकर आये और एक दूसरे पर हमला कर दिया।

राम रहीम से एसआईटी ने की पूछताछ

रोहतक। पंचकूला में भड़की हिंसा के मामले में बुधवार को एसआईटी ने सुनारिया जेल में बंद यौन शोषण मामले में सजा काट रहे डेरा प्रमुख राम रहीम से पूछताछ की। करीब पांच घंटे पूछताछ के दौरान बाबा से कई सवाल पूछे। जांच अधिकारी पूछताछ से संतुष्ट दिखे और उन्होंने बताया कि दोबारा पूछताछ की जाएगी। डेरा प्रमुख को साध्वियों से यौन शोषण मामले में दोषी ठहराए जाने के बाद भड़की हिंसा में 35 लोग मारे गए थे। पंचकूला हिंसा मामले में पुलिस ने 28 नवंबर को हनीप्रित सहित 12 लोगों के खिलाफ देशद्रोह की चार्जशीट पेश की थी। इसी मामले को लेकर राम रहीम से लगातार पूछताछ की जा रही है। पूछताछ के दौरान बाबा की वीडियो कांफ्रेसिंग के जरिए पेशी भी हुई। पंचकूला से एसआईटी प्रभारी डीएसपी मुकेश मल्होत्रा के नेतृत्व में बुधवार को तीन सदस्यीय एक टीम सुनारिया जेल पहुंची। एसआईटी ने पहले ही राम रहीम से पूछताछ के लिए जिला मजिस्ट्रेट से अनुमति ले ली थी। करीब 12 बजे पूछताछ शुरू की गई। पूछताछ के कुछ ही देर बाद बाबा को वीडियो कांफ्रेसिंग के जरिए पेश किया गया। पेशी के बाद एसआईटी ने फिर पूछताछ शुरू की। बाबा से पंचकूला में हुई हिंसा के बारे करीब तीन दर्जन सवालों के जबाव मांगे।

8,000 करोड़ रपए के धनशोधन मामले में लालू प्रसाद दामाद से पूछताछ

नई दिल्ली। प्रवर्तन निदेशालय ने 8,000 करोड़ रपए के धनशोधन मामले में आज राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद की सांसद बेटी मीसा भारती के पति शैलेश कुमार से एक बार फिर पूछताछ की। आधिकारिक सूत्रों ने आज यह जानकारी दी।उन्होंने कहा कि शैलेश को फिर से तलब किया गया है ताकि उनसे मामले से जुड़ी जानकारियां ली जा सकें और उनका बयान दर्ज किया जा सके। शैलेश और उनकी पत्नी मीसा से पहले भी इस मामले में पूछताछ की जा चुकी है। सूत्रों ने बताया कि इस मामले में ईडी की ओर से अब तक जब्त दस्तावेजों और मीसा एवं अन्य आरोपियों के बयानों को सामने रखकर शैलेश से पूछताछ की जाएगी। मेसर्स मिशैल प्रिंटर्स एंड पैकर्स प्राइवेट लिमिटेड नाम की एक कंपनी, उनके अन्य वित्तीय मामलों और इस मामले में पहले गिरफ्तार किए जा चुके चार्टर्ड अकाउंटेंट से रिश्तों में कथित भूमिका के लिए ईडी शैलेश एवं मीसा से पूछताछ कर रही है।

गिरफ्तार पांच बदमाशों में सुरक्षा गार्ड का बेटा, दामाद व अन्य रिश्तेदार शामिल

मृत सुरक्षा गार्ड था असली साजिशकर्ता

नई दिल्ली। राजधानी के मानसरोवर पार्क इलाके में जिंदल परिवार की बुजुर्ग महिला, उसकी तीन बेटियों व घर के सुरक्षा गार्ड की सनसनखेज हत्या के मामले में दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा ने पांच बदमाशों को गिरफ्तार कर उनसे लूटे गए गहने, 50 हजार रपए नकद और वारदात में इस्तेमाल हथियार बरामद कर लिया है। पकड़े गए बदमाशों में मृत सुरक्षा गार्ड का बेटा अनुज (25), दामाद विकास उर्फ विक्की (26), उसके साथी सन्नी (22), नीरज (37) व विकास शामिल हैं। पुलिस जांच के मुताबिक वारदात में मारा गया सुरक्षा गार्ड राकेश ही मुख्य साजिशकर्ता बताया जा रहा है। उसके इशारे पर ही आरोपियों ने चुपके से बुजुर्ग महिला के घर में प्रवेश कर वारदात को अंजाम और मामले का खुलासा होने के डर से सुरक्षा गार्ड की भी हत्या कर दी। इसके अलावा पूछताछ के लिए दो

वारदात की खुलने के डर से बेटे व दामाद ने ही कर दी थी सुरक्षा गार्ड की हत्यागार्ड की पत्नी व दो अन्य बदमाशों को हिरासत में लेकर पुलिस पूछताछ जारी

अन्य आरोपियों नीतिन और दीपक को देर रात हिरासत में लेकर पुलिस इस वारदात में मृत सुरक्षा गार्ड की पत्नी की भूमिका की भी जांच कर रही है। संयुक्त आयुक्त आलोक कुमार के मुताबिक 6-7 अक्टूबर की रात इलाके में जिंदल परिवार के घर में लूटपाट के बाद घर में बुजुर्ग महिला और उनकी तीन बेटियों की बेरहमी से गला रेतकर हत्या कर कर बदमाशों ने सुरक्षा गार्ड को भी मौत के घाट उतार दिया था। अपराध शाखा के उपायुक्त रामगोपाल नाइक की निगरानी में मामले जांच शुरू हुई थी। हत्या करने के अंदाज ने पहुंचाया कातिल तक : जांच-पड़ताल के दौरान टीम ने पाया कि हत्या करने वाले शख्स ने खास तरीके से गला रेत कर वारदात को अंजाम दिया है। आरोपी जानते थे कि तुरंत मौत की नींद सुलाने के लिए कहां वार करना चाहिए। जांच के दौरान शक की सुई मृत सुरक्षा गार्ड राकेश के दामाद विकास की तरफ घूमी, जो जीटीबी अस्पताल के विभिन्न विभागों में सफाई कर्मचारी रह चुका है। पुलिस ने उसे हिरासत में लेकर सख्ती से पूछताछ की तो उसने अपना गुनाह कबूल कर लिया।

मृत सुरक्षा गार्ड ने ही रची थी साजिश : आरोपी ने बताया कि 15 साल से जिंदल परिवार के घर में सुरक्षा गार्ड की नौकरी कर रहे राकेश ने रक्षाबंधन के दौरान अपने घर बागपत में बेटे और दामाद के साथ मिलकर लूट की साजिश रची थी। इसके बाद राकेश के दामाद और बेटे ने रिश्तेदार सन्नी, उसके भांजे विकास, दोस्त दीपक, नीरज, विकास उर्फ विक्की और नीतिन को साजिश में शामिल कर लिया। आरोपियों ने 25 सितम्बर को इलाके की रेकी कर वारदात को अंजाम दिया। पकड़े जाने के डर से सुरक्षा गार्ड को भी मार डाला : देर रात सुरक्षा गार्ड राकेश के इशारे पर घर में घूस कर लूटपाट के बाद बेटे व दामाद ने सोचा कि पुलिस द्वारा पूछताछ में गार्ड राकेश ने सच्चाई बता दी, तो वे पकड़े जाएंगे। इसी डर में राकेश की भी हत्या कर दी। वारदात के बाद आरोपी अपास में दो-दो लाख रु पए नकद व जेवर का बंटवारा कर फरार हो गए।

पुलिस को सुरक्षा गार्ड पत्नी पर भी शक : आरोपियों से पूछताछ के बाद पुलिस को मृत सुरक्षा गार्ड की पत्नी की भूमिका पर शक है। सुरक्षा गार्ड की पत्नी से पुलिस पूछताछ जारी है।

ओबीसी कोटे से अलग एक फीसद आरक्षण देने की तैयारी

जयपुर। अलग से पांच प्रतिशत आरक्षण मांग रहे गुर्जरों को शांत रखने के लिए राज्य सरकार ने इन्हें अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) से अलग एक प्रतिशत आरक्षण देने की तैयारी कर ली है। बाकी आरक्षण ओबीसी में मिलता रहेगा। इसका खाका तैयार हो गया है। इस संबंध में सरकार कानूनी विशेषज्ञों से राय ले रही है। सब ठीक रहा तो जल्द ही नोटिफिकेशन जारी होगा। प्रदेश में अभी एससी को 16 प्रतिशत, एसटी को 12 प्रतिशत और ओबीसी को 21 प्रतिशत सहित कुल 49 प्रतिशत आरक्षण है। गुर्जरों को एक प्रतिशत आरक्षण अलग से देने के बाद कुल आरक्षण 50 प्रतिशत हो जाएगा, जिससे सुप्रीम कोर्ट के आदेश भी प्रभावित नहीं होंगे। सुप्रीम कोर्ट ने सरकार को निर्देश दिए थे कि 50 प्रतिशत से अधिक आरक्षण नहीं हो। इसलिए 50 प्रतिशत के अंदर आरक्षण देने की राह निकाली गई है।

इंदौर से पटना तकः

इन महिला मेयर्स ने बदल डाली शहरों की फिजा, किया नाम रोशन

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ को पहली बार महिला मेयर मिली हैं। भारतीय जनता पार्टी की संयुक्ता भाटिया ने इस बार लखनऊ नगर निगम के मेयर का चुनाव जीता है। लखनऊ नगर निगम के 100 साल के इतिहास में पहली बार कोई महिला मेयर के पद पर पहुंची हैं। संयुक्ता भाटिया ने 3,77,166 वोट हासिल कर अपनी प्रतिद्वंद्वी समाजवादी पार्टी की उम्मीदवार मीरा वर्धन को 1,31,356 मतों के अंतर हराया है। संयुक्ता को करीब 42 फीसदी वोट मिले। लखनऊ की पहली महिला मेयर चर्चा का विषय बनी हुई हैं। ऐसे में हम आपको देश के कई शहरों की महिला मेयर से मिलवा रहे हैं, जो अपने शहरों को खूबसूरत बनाने के लिए लगातार काम कर रही हैं।

इंदौर- मालिनी गौड़

देश के सबसे स्वच्छ शहर इंदौर की मेयर मालिनी गौड़ को 'भाभी' के नाम से जाना जाता है। उनका कहना है कि वह शहर के मुद्दों को लेकर बहुत संवेदनशील हैं। गौड़ ने अपने पति और राज्य के शिक्षामंत्री लक्ष्मण सिंह गौड़ की साल 2008 में सड़क दुर्घटना में मौत के बाद राजनीति में कदम रखा था। पहले विधायक का चुनाव जीता था। इसके बाद उन्होंने मेयर का चुनाव लड़ा था।

अशक्त बच्चों के लिए शिक्षा का अधिकार पर केंद्र को नोटिस

पीठ ने केंद्र और सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय को नोटिस जारी कर उन्हें चार हफ्त के अंदर जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया।

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने अशक्त बच्चों के शिक्षा के अधिकार को सुनिश्चित करने के लिए दायर याचिका पर आज केंद्र को नोटिस जारी किया। कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश गीता मित्तल और न्यायमूर्ति सी हरि शंकर की पीठ ने केंद्र और सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय को नोटिस जारी कर उन्हें चार हफ्त के अंदर जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया। साथ ही, इस मामले को अगले साल छह मार्च के लिए सूचीबद्ध कर दिया। यह याचिका विधि सेंटर फॉर लीगल पॉलिसी ने दायर की है। इसने कहा है कि संयुक्त राष्ट्र अशक्त जन अधिकार कंवेंशन का अनुमोदन करने के नाते देश में सभी स्कूलों में समावेशी शिक्षा को प्रभावी बनाना एक दायित्व है।दरअसल, समावेशी शिक्षा एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें अशक्त या गैर अशक्त छात्र साथ में शिक्षा हासिल करते हैं और शिक्षण एवं सीखने की पणाली उपयुक्त रूप से अनुकूल होती है। याचिका में कहा गया है कि अशक्त बच्चों के शिक्षा के अधिकार के लिये सरकार का यह दायित्व बनाता है कि वह सुनिश्चित करे कि स्कूल विभिन्न तरह के अशक्त बच्चों के सीखने की जरूरत को पूरा करने के लिए जरूरी सुविधाएं मुहैया करे। गौरतलब है कि समावेशी शिक्षा के सिद्धांत को संयुक्त राष्ट्र ने 2006 में स्वीकार किया था।

अगर आप भी खाते हैं गोलगप्पे तो जरूर पढ़ें ये खबर

घाटमपुर(कानपुर) सजेती में गोलगप्पा (पानी का बताशा) खाने से किसान की जान चली गई। गले में एक बताशा ऐसा फंसा कि वह तड़पकर रह गया। मौके पर ही बेहोश हो गया और अस्पताल पहुंचने से पहले उसकी सांसें थम गईं। जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज के ईएनटी विशेषज्ञ प्रो. संदीप कौशिक का कहना है कि पानी के बताशे यानी गोलगप्पा खाने में अक्सर लोग पूरा मुंह खोलकर गर्दन पीछे कर खाते हैं। नरेश सचान की मौत इसी तरीके से गोलगप्पा खाने हो सकती है। जब उन्होंने बताशा खाया होगा तो वह गर्दन पीछे करने से सीधे सांस नली में जाकर फंस गया और सांस वापस नहीं आई तो जान चली गई। हरबसपुर निवासी नरेश सचान (45) बुधवार को सांखाहारी गांव चौराहे की ओर निकले थे। वह खेती-किसानी के साथ ट्रक भी चलाते थे। चौराहे पर बताशे का ठेला लगा देखा तो 10 रुपए के बताशे खिलाने को कहा। चौराहे पर मौजूद लोगों के मुताबिक तीसरा बताशा खाने पर नरेश को खांसी आने लगी और खांसते-खांसते उलझन महसूस होने लगी। कुछ ही देर बाद वह ठेले के पास लड़खड़ाकर गिर पड़े। लोग दौड़कर आए और चेहरे पर पानी छिड़का तो उनको होश आ गया। थोड़ी देर तक सामान्य दिखने के बाद नरेश की हालत फिर बिगड़ गई। वह शैल तिवारी की परचून की दुकान के सामने पड़ी बेंच पर लेट गए। लगभग 10 मिनट तक करवटें बदलने के बाद उनमें किसी तरह की हरकत होनी बंद हो गई। उन्हें उठाने का काफी प्रयास किया गया पर कोई जवाब नहीं आया। घबराए लोगों ने तुरंत नरेश के परिजनों को सूचना दी। परिजन व पड़ोसी उन्हें लेकर घाटमपुर सीएचसी भागे। सीएचसी में डॉ. अजीत सचान ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। बताया गया कि नरेश की रास्ते में ही मौत हो गई। नरेश के पिता राम नारायण की पहले ही मौत हो चुकी है।

पोस्टमार्टम के बाद स्पष्ट होगा

घाटमपुर सीएचसी के चिकित्साधिकारी डॉ. अजीत सचान का कहना है कि परिवार के लोग बता रहे हैं कि पानी का बताशा खाने से नरेश की मौत हुई है। आशंका है कि बताशा गले में फंस जाने से सांस नली चोक हो गई हो। एक संभावना यह भी है कि हार्ट अटैक से मौत हुई हो। असली कारण पोस्टमार्टम से ही स्पष्ट होगा।

गोलगप्पे खाने का सही तरीका

हमेशा मुंह नीचेकर खाना खाएं और पानी पीएं।

गर्दन झुकाकर भोजन करना सबसे सुरक्षित मुद्रा है।

गर्दन झुकाकर भोजन करने से सांस नली के लैरिन्कस सुरक्षित रहते हैं।

याद किए गए अंबेडकर

कार्यक्रम के दौरान चौधरी प्रेम सिंह की तबीयत बिगड़ी

नई दिल्ली। भारत रत्न बाबा साहब डा. भीमराव अंबेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस पर दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी की ओर से पंचकुईया रोड स्थित अंबेडकर भवन में दलित-एकता सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस मौके पर दिल्ली से हजारों दलित कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम का संयोजन अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सचिव तरु ण कुमार ने किया। कांग्रेसियों ने अंबेडकर की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। इस दौरान कांग्रेस के वरिष्ठ नेता व दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष चौधरी प्रेम सिंह की तबियत अचानक बिगड़ गई।

आनन-फानन में उन्हें एंबुलेंस बुलाकर नजदीक के अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनकी तबीयत गंभीर बनी हुई है। दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय माकन ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि डा. अंबेडकर ने समाज में व्याप्त जातीय भेदभाव को समाप्त करने की वकालत की तथा संविधान में दलितों, पिछड़ों व महिलाओं को अधिकार दिलाने के लिए प्रावधान किए । माकन ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने हमेशा दलितों, वंचितों और पिछड़ों के विकास के लिए कार्य किए है और उनको उचित प्रतिनिधित्व भी दिया है। कार्यक्रम के संयोजक अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सचिव तरुण कुमार ने कहा कि भाजपा सरकार के कार्यकाल में दलित का उत्पीड़न किया जा रहा है। साथ ही आप नेता कुमार विास भी डा. अंबेडकर पर आपत्तिजनक टिप्पणी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस द्वारा चलाए गए 20सूत्रीय कार्यक्रम के अंतर्गत दिल्ली देहात में दलितों की रिहायशी प्लाट व कृषि भूमि का आवंटन किया गया। उन्होंने कहा कि दिल्ली में विभिन्न स्थानों पर झुग्गियों व कच्चे मकानों में नरकीय जीवन व्यतीत कर रहे हजारों दलित परिवारों को वहां से निकाल कर सरकार द्वारा विकसित पुनर्वास कालोनियों में रिहायशी प्लाटों व बने बनाये मकानों में बसाया गया। जहां आज वे सभी दलित भाई खुले व स्वस्थ वातावरण में मान-सम्मान का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इस मौके पर पीएल.पुनिया, पूर्व सांसद महाबल मिश्रा, चत्तर सिंह, दिल्ली प्रदेश अनूसूचित जाति विभाग के चैयरमेन शिवराम सिंह, पूर्व विधायक श्रीमती दर्शना रामकुमार समेत अन्य लोग भी मौजूद रहे।

विधानसभा में दी गई श्रद्धांजलि : दिल्ली विधानसभा में भी बाबा साहब को श्रद्धांजलि दी गई। इस मौके पर दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, विधानसभा अध्यक्ष राम निवास गोयल, स्वास्य मंत्री सत्येंद्र जैन, समाज कल्याण और एससी एसटी कल्याण मंत्री राजेंद्र पाल गौतम, पर्यावरण मंत्री इमरान हुसैन, उप विधानसभा अध्यक्ष राखी बिड़लान और विधायक चौधरी फतेह सिंह, अलका लांबा, राजू धिंगान और मनोज कुमार आदि ने बाबा साहेब को श्रद्धांजलि देने के साथ प्रार्थना सभा में भी हिस्सा लिया। इस मौके पर भजन गायन का भी आयोजन किया गया। सपा नेताओं ने दी श्रद्धांजलि : समाजवादी पार्टी के दिल्ली प्रदेश ने बुधवार को केन्द्रीय कार्यालय कॉपरनिक्स लेन पर डॉ. भीमराव अंबेडकर के 61वें महापरिनिर्वाण पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस मौके पर सपा प्रदेश अध्यक्ष उषा यादव व प्रदेश प्रमुख महासचिव आरएस यादव मौजूद थे।

सीजीएचएस कार्ड धारकों के लिए राहत की खबर महंगी दवाओं की रिक्वेस्ट भी ऑनलाइन दी जा सकेगी

निजी अस्पतालों में इलाज कराना हुआ आसान

नई दिल्ली। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय से केंद्रीय कर्मचारियों और पेंशनधारियों के लिए एक राहत भरी खबर आई है। अब इन्हें निजी अस्पतालों में इलाज के लिए सरकारी अस्पतालों और डिस्पेंसरी के चक्कर काटने से राहत मिलेगी।

यही नहीं उन्हें महंगी दवाओं के लिए डिस्पेंसरी से मेडिकल स्टोर तक बार-बार घूमने से भी न सिर्फ छुटकारा मिलेगा बल्कि सेवानिवृत्त कर्मचारी सीजीएचएस का प्रीमियम भी ऑनलाइन भर सकेंगे। प्रधानमंत्री कार्यालय के आदेश पर स्वास्य मंत्रालय ने केंद्र सरकार स्वास्थ्य योजना (सीजीएचएस) में जरूरी बदलाव कर दिए हैं।

रिटार्यड कर्मचारी इसका प्रीमियम ऑनलाइन भर सकेंगे

नए नियमों के तहत कोई भी केंद्रीय कर्मचारी या पेंशनर किसी ऑपरेशन या जांच की जरूरत महसूस करता है तो अपने नजदीकी सीजीएचएस डिस्पेंसरी के मेडिकल ऑफिसर से अनुमति लेकर पैनल में मौजूद किसी भी निजी अस्पताल में इलाज की सुविधा उठा सकता है। इससे पहले इसका लाभ उठाने वाले कर्मचारी को निजी अस्पताल में इलाज कराने के लिए लंबा चक्कर लगाना होता था।

मरीज को पहले डिस्पेंसरी में दिखाना होता था। फिर वहां से रेफर होकर किसी बड़े सरकारी अस्पताल जाना होता था। वहां पर विशेषज्ञ चिकित्सक की अनुमति लेकर वापस डिस्पेंसरी जाकर जरूरी कागजी कार्यवाही करनी पड़ती थी इसके बाद ही निजी अस्पताल में इलाज मिलता था।

निर्धारित प्रक्रिया न अपनाने पर क्लेम मंजूर नहीं होता था। मगर यह प्रक्रिया अब सरल हो गई है। यह भी : सिर्फ इलाज ही नहीं कैंसर जैसे असाध्य रोगों की महंगी दवा पाने के लिए भी नियमों में बदलाव किए गए अब नजदीकी डिस्पेंसरी से ही महंगी दवाओं के लिए ऑनलाइन रिक्वेस्ट दी जा सकेगी।

जिसे एलर्ट मिलते ही निर्धारित मेडिकल स्टोर से हासिल किया जा सकेगा।

बता दें आम तौर पर महंगी और पेटेंड दवाएं सीजीएचएस डिस्पेंसरी के स्टॉक में नहीं होती हैं इसे चिकित्सक के प्रेस्क्रिप्शन के बाद मंगाया जाता है। ठीक इसी तरह रिटार्यड कर्मचारियों को सीजीएचएस सुविधा के लिए जरूरी प्रीमियम भरने की सुविधा ऑनलाइन शुरू कर दी गई है।

इससे पहले बुजुर्ग कर्मचारियों को बैंको में डाफ्ट बनवाने और धक्के खाने के लिए मजबूर होना पड़ता था।

केंद्र सरकार स्वास्थ्य योजनाओं के महानिदेशक डा. जगदीश प्रसाद ने कहा कि इस पेशेंट फ्रेंडली योजना से 18 लाख से अधिक लाभांवितों को हर दिन परोक्ष रूप से लाभ मिलेगा।

कितनी भयावह बात है कि हमें पर्यावरण की रक्षा के लिए अपनी ही सरकार से संघर्ष करना पड़ता है -एनसल एडम्स

सहायता-प्रोत्साहन में बढ़ोत्तरी

हाल में कुछ ठोस कदम उठाये गये हैं। मंगलवार को वाणिज्य मंत्री सुरेश प्रभु की घोषणाओं के मुताबिक निर्यात क्षेत्र के सहायता-प्रोत्साहन में बढ़ोत्तरी की गयी है। 2017-18 के दौरान इसमें से 2,816 करोड़ रु पये का खर्च होगा। कुल सहायता-प्रोत्साहन में करीब 8450 करोड़ रु पये की बढ़ोत्तरी घोषित की गयी है। विदेश व्यापार नीति 2015-20 की मध्यावधि समीक्षा के तहत ये घोषणाएं की गयीं। इस सहायता-प्रोत्साहन से चमड़े, हैंडीक्रॉफ्ट, कालीन, खेल साज-सामान, इलेक्ट्रानिक साज-सामान का निर्यात करनेवालों को फायदा पहुंचेगा। गौरतलब है कि निर्यात के हाल बहुत लंबे समय से अच्छे नहीं चल रहे हैं। नियातक प्रोत्साहन-सहायता की मांग कर रहे थे। खासकर नोटबंदी के बाद निर्यातकों की समस्याओं में बहुत इजाफा हो गया था। कालीन उद्योग और चमड़े के उत्पाद बनानेवाले उद्योगों में कई लोगों को रोजगार मिलता है। इन उद्योगों की हालत भी नोटबंदी के बाद खस्ता हो गयी थी। कई चमड़ा इकाइयों के तो बंद होने की नौबत आ गयी थी। उन्हें इन कदमों से सहारा मिलेगा ऐसा माना जा सकता है। पर सोचने की बात यह कि सिर्फ यह कदम काफी नहीं है। निर्यात से जुड़ी मूलभूत समस्याओं को समझना होगा। अंतरराष्ट्रीय बाजार में वे ही उत्पाद टिक पायेंगे जो लागत में सस्ते और अपनी गुणवत्ता में अधिकतम हों, उनमें तमाम तरह की विशेषताएं हों। यानी कुल मिलाकर हालात ऐसे बनाये जाने चाहिए कि भारत में निर्यातक सस्ते दामों पर श्रेष्ठ उत्पाद तैयार कर सकें। भारतीय उत्पाद अंतरराष्ट्रीय बाजारों में लागत के मामले में पिट जाते हैं। एक वक्त में भारत के कपड़े पूरे ग्लोबल बाजार में धूम मचाते थे,अब ऐसा नहीं है। बांग्लादेश ने भारत को इस मामले में जबरदस्त प्रतिस्पर्धा दी है। उसने अपने यहां ऐसी स्थितियां पैदा की हैं, जिनमें सस्ते आइटम तैयार कर पाना संभव है। इसलिए बांग्लादेश के सस्ते और बेहतर कपड़े पूरी दुनिया में धूम मचा रहे हैं। प्रोत्साहन सहायता की तुलना टॉनिक से की जा सकती है, जो शरीर में थोड़ी ताकत बढ़ा सकते हैं, पर शरीर का स्वस्थ होना जरूरी है। शरीर को किसी बीमारी वगैरह से ग्रस्त नहीं होना चाहिए। भारतीय निर्यात खराब आधारभूत ढांचे की समस्या से जूझ रहे हैं। बिजली-सड़क की आफतें अपनी जगह हैं। इन सबसे उत्पादों की लागत बढ़ जाती है और वे अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धा से बाहर हो जाते हैं। केंद्र सरकार और राज्य सरकारों को उन मसलों पर भी गंभीरता से विचार करना चाहिए, सिर्फप्रोत्साहन-टॉनिक काफी नहीं है।

''प्रभावी कार्रवाई'

राजधानी के मैक्स अस्पताल में मुर्दा करार दिये गए जुड़वां बच्चों में से आखिरी की भी मौत इलाज के दौरान हो गई। बच्ची की मौत तो 30 नवम्बर को ही हो गई थी, जबकि सांस ले रहे बच्चे को चिकित्सकों ने मरा करार दे कर पॉलिथीन में लपेट दिया था। यह राजधानी के पांच सितारा जैसी हैसियत और प्रतिष्ठा रखने वाले शालीमार बाग के मैक्स अस्पताल के काबिल डॉक्टरों की योग्यता, संवेदनशीलता और मानवीयता है। यह हिला देने वाला वाकया है। आखिर मौत और जिंदगी में इतना फासला तो होता है कि जिसे भांपने के लिए किसी दिव्य-दृष्टि या विशेष योग्यता की जरूरत नहीं होती है। इसके लिए एक मनुष्य की चेतना काफी है। फिर डॉक्टरों को तो किसी की मौत को चकमा दे देने का हुनर होता है। उसे जमीन का फरिश्ता कहने के पीछे यही बात है। तब मैक्स के वे दोनों डॉक्टर नवजात जुड़वां के मां-बाप के लिए यमदूत कैसे बन गए? उन्होंने बिना जरूरी परीक्षण के ही जिंदा बच्चे को मरा कैसे घोषित कर दिया? अब तो प्रारम्भिक जांच रिपोर्ट ने भी डॉक्टरों की तरफ से बरती गई घोर निंदनीय लापरवाही की तसदीक कर दी है। मैक्स ने भी ''गलती' मानते हुए आरोपित दोनों डॉक्टरों को निलंबित कर दिया है। पुलिस ने भी मामले के आधार पर अस्पताल को तलब किया है पर डॉक्टरों की गिरफ्तारी नहीं। हालांकि दिल्ली सरकार ने ''प्रभावी कार्रवाई' के लिए अंतिम रिपोर्ट का इंतजार करने का फैसला किया है। स्वास्थ्य मंत्री सत्येन्द्र जैन ने अभी पांच दिन पहले अस्पताल का लाइसेंस निरस्त करने की बात कही थी।

यह पता नहीं कि सरकार इस पर क्या कार्रवाई करेगी। लेकिन डॉक्टरों के इस व्यवहार ने कई सवाल उठाये हैं। पहली नजर में यही लगता है कि अस्पताल में आवश्यक दक्षता वाले चिकित्सक नहीं हैं। वे हैं भी तो काम के दबाव या न दबाव होने की स्थिति में भी ''सब चलता है' की जाहिली मानसिकता से ग्रस्त हैं। वे इनसे प्रेरित न भी होते हों तो वर्ग-बोध से निर्देशित हैं, जिनमें मरीज से व्यवहार उसकी हैसियत पर निर्भर है। ताजा घटना पर मचे कम घनत्व के बवाल में यह मालूम पड़ जाता है। दुर्भाग्यपूर्ण यह कि सरकार भी उसी नजरिये या सोच से प्रतिक्रिया दे रही है। दरअसल, जिन भौतिकताओं को निजी-सामाजिक व्यवहारों में तरजीह दी गई है, उसमें सेहत की इज्जत का सबक गायब कर दिया गया है। इससे ही सेवा व्यापार बन गई है।

सत्संग

परमात्मा

मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को समझ लेता है, उसका संबंध परमात्मतव से स्पष्ट और प्रकट हो जाता है, जिसकी अभिव्यक्ति उच्च शक्तियों के रूप में होकर संसार को प्रभावित करने लगती है और लोग उस व्यक्ति को अवतार, ऋषि, योगी आदि के रूप में पूजने और मनन करने लगते हैं। परमात्म तत्त्व वह अनंत जीवन, वह सर्वव्यापी चैतन्य और वह सवरेपरि सत्ता है, जो इस जगत के पीछे अदृश्य रूप से काम करती, इसका नियमन और नियंतण्रकरती है, जिससे दृश्यमान जीवन आता है। इसी अनंत, असीम और अनादि ज्ञान और शक्ति के भंडार से संबंध स्थापित हो जाने से साधारण मनुष्य असाधारण बनकर अपने वास्तविक स्वरूप का ज्ञाता हो जाता है। अणु-अणु का मूलाधार वह परमात्म तव ही है। आकार-प्रकार में भिन्न दिखते हुए भी प्रत्येक पदार्थ एवं प्राणी एक उसी तत्त्व का अंश है। जिस प्रकार समुद्र से उठाया हुआ एक जल बिन्दु भिन्न दिखता हुआ भी मूलत: उसी का संक्षिप्त स्वरूप होता है और समुद्र की सारी विशेषताएं उसमें होती हैं, उसी प्रकार व्यक्तिगत जीवन और समष्टिगत जीवन सीमित और असीमित के मिया के भेद के साथ तत्त्वत: एक ही है। जो जीवात्मा है, वही परमात्मा और जो परमात्मा है, वही जीवात्मा। इस सत्य को जानना ही आत्म ज्ञान है। हममें और परमात्मा में कोई भेद नहीं है। यही ज्ञान अथवा अनुभव आत्मानुभूति आत्म प्रतीति अथवा आत्म ज्ञान के अर्थ में मानी गई है। प्रतीति के साथ शक्ति का अटूट संबंध है, जिसे अपने प्रति सर्वशक्तिमान की प्रतीति होती है। अपने प्रति इस प्रतीति की स्थापना करने का प्रयास ही आत्म ज्ञान की ओर अग्रसर होना है। जिसका उपाय आत्म चिंतन के अलावा क्या हो सकता है? जब यह चिंतन अभ्यास पाते-पाते अविचल, असंदिग्ध अतर्क और अविकल्प हो जाता है, तभी मनुष्य में आत्म ज्ञान का दिव्य प्रकाश अपने आप विकर्ण हो जाता है, दिव्य शक्तियां स्वयं आकर उसका वरण करने लगती हैं। आत्म ज्ञान ही मनुष्य का सर्वोच्च लक्ष्य है जिसने इस लक्ष्य की ओर ध्यान नहीं दिया, भौतिक विभूतियों के लोभ में इसकी उपेक्षा कर दी, उसने मानो मानव जीवन का सारा मूल्य गंवा दिया। यह भूल मनुष्य जैसे विवेकशील प्राणी के लिए अनुचित है। इस अविवेक को त्याग कर हर भटके हुए व्यक्ति को शीघ्र से शीघ्र ज्ञान मार्ग को अपना लेना चाहिए।

''2022 तक नया भारत'

नीति और वित्त पोषण के मोर्चे पर ये दो घोषणाएं यकीनन भारत के स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए उत्साहवर्धक खबरें थीं। समूचे देश में करीब 155,000 उपकेंद्रों का संजाल है, जिनमें से प्रत्येक के माध्यम से ग्रामीण इलाकों में 5,000 के करीब लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराई जाती हैं। लेकिन तय यह भी कि कई बार ऐसा भी हुआ है कि ये उपकेंद्र क्षमता के अनुरूप कार्य नहीं कर पाए। वादे भारत की राजनीतिक का अभिन्न हिस्सा होते हैं। 2016-17 के केंद्रीय बजट में वित्त मंत्री ने स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए ऐसी ही एक महत्त्वपूर्ण घोषणा की थी कि ''एक नई स्वास्थ्य संरक्षण योजना आरंभ की जाएगी।'

सतीश पेडणोकर

2017 में पेश किए गए केंद्रीय बजट में वादा किया था, ''डेढ़ लाख स्वास्थ्य उपकेंद्रों (एचएससी) को स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य सुधार केंद्रों (एचडब्ल्यूसी) में तब्दील कर दिया जाएगा।' इसके कुछ बाद मार्च, 2017 में भारत की नई स्वास्थ्य नीति संबंधी जारी विज्ञप्ति में ''चुनिंदा के स्थान पर समग्र प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल' की बात कही गई और इस प्रस्ताव का उल्लेखथा कि ''समग्र प्राथमिक देखभाल के एक पूरे पैकेज मुहैया कराने वाली' सुविधाओं को ''स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य सुधार केंद्र' के नाम से पुकारा जाएगा।

नीति और वित्त पोषण के मोर्चे पर ये दो घोषणाएं यकीनन भारत के स्वास्थ्य क्षेत्रके लिए उत्साहवर्धक खबरें थीं। समूचे देश में करीब 155,000 उपकेंद्रों का संजाल है, जिनमें से प्रत्येक के माध्यम से ग्रामीण इलाकों में 5,000 के करीब लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराई जाती हैं। लेकिन तय यह भी कि कई बार ऐसा भी हुआ है कि ये उपकेंद्र क्षमता के अनुरूप कार्य नहीं कर पाए। वादे भारत की राजनीतिक का अभिन्न हिस्सा होते हैं। 2016-17 के केंद्रीय बजट में वित्त मंत्री ने स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए ऐसी ही एक महत्त्वपूर्ण घोषणा की थी कि ''एक नई स्वास्थ्य संरक्षण योजना आरंभ की जाएगी।

फरवरी, 2016 में केंद्रीय बजट की घोषणा के पश्चात अफरा तफरी के बीच एक नई योजना लागू करने की तत्परता देखी गई। और आधे-अधूरे अंदाज में राष्ट्रीय स्वास्थ्य संरक्षण योजना (एनएचपीएस) नाम से इसे घोषित कर दिया गया। बताया जाता है कि इस योजना का मसौदा सक्षम प्राधिकार की मंजूरी के लिए एक साल से ज्यादा समय से यूं ही पड़ा है। फलस्वरूप, पहले से जारी राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना को झटका लगा क्योंकि माना जा रहा था कि नई योजना इसका स्थान लेने वाली थी।

एकाएक हैरत हुई इस बात पर कि 2017-18 के बजट में प्रस्तावित एनएचपीएस के आवंटन 1,500 करोड़ रुपये से घटाकर 1,000 करोड़ (बजटीय आंकड़ों की तुलना) कर दिया गया। गरीबी रेखा से नीचे गुजर-बसर करने वालों के लक्षित समूह के लिए राष्ट्रव्यापी एनएचपीएस का अनुमानित आवंटन करीबन 7,000 करोड़ रुपये सालाना होगा। इस परिदृश्य में भारत में केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा की जाने वाली नई घोषणा से लोगों में किसी उत्साह का संचार नहीं होता।

बजट को घोषित किए दस महीने से ज्यादा का समय हो चला है, और 4,000 स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य सुधार केंद्रों की स्थापना का कार्य प्रगति पर है, लेकिन इस गति से सभी उपकेंद्रों को एचडब्ल्यूसी में तब्दील करने में पचास साल लग जाएंगे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का ''2022 तक नया भारत' आह्वान एक अवसर है, जब समयबद्ध लक्ष्य के साथ एचएससी को एचडब्ल्यूसी में अच्छे से तब्दील किया जा सकता है। 2018-19 के केंद्रीय बजट को पेश किए जाने का समय करीब आ गया है, इसलिए एचडब्ल्यूसी स्थापित करने के ठोस उपाय किए जाने चाहिए। प्रत्येक एचएससी को एचडब्ल्यूसी में बदले जाने के लिए 15-17 लाख रुपये की दरकार होगी यानि कुल 200,000 एचडब्ल्यूसी के लिए 30,000 से 35,000 करोड़ रुपये के निवेश की जरूरत होगी। अभी अपनाए जा रहे वृद्धि-उन्मुख तरीके से अपेक्षित लक्ष्य हासिल नहीं किए जा सकते। एक साल में कुल चार हजार और फिर हर गुजरते साल में कुछ हजार अतिरिक्त केंद्रों की स्थापना देश की जरूरत को पूरा नहीं करेगी। दूसरे, यह भी जरूरी है कि स्वास्थ्य पण्रालियों के समक्ष नवोन्मेषी समाधान की तरफ बढ़ने की चुनौती पेश करनी होगी। पांच सालों में दो लाख एचडब्ल्यूसी की स्थापना के लिए प्रति वर्ष 40 लाख एचडब्ल्यूसी की स्थापना की जानी चाहिए। सभी राज्यों के लिए चरणीकरण का तरीका नहीं होना चाहिए। सिक्किम, पुडुचेरी या हिमाचल प्रदेश जैसे छोटे राज्य और केंद्र-शासित क्षेत्र एक या दो साल में ही अपने यहां एचएचसी को एचडब्ल्यूसी में बदल सकते हैं। उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे बड़े राज्यों को इस दिशा में सक्रियता से बढ़ने के लिए समर्थन की जरूरत है। जहां ग्रामीण भारत में विभिन्न प्रकार के उपकेंद्र मौजूद हैं, वहीं शहरी क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल के लिए ऐसी ढांचागत सुविधाएं नहीं हैं। शहरी आबादी में सरकारी स्वास्थ्य पण्राली और लोगों के मध्य संपर्क पहले पहल प्राय: शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के जरिए होता है। ये केंद्र प्रति 50,000 लोगों की आबादी (ग्रामीण क्षेत्रों में एक एचएससी द्वारा सेवित जनसंख्या की दस गुणा) के लिए कार्यरत हैं।

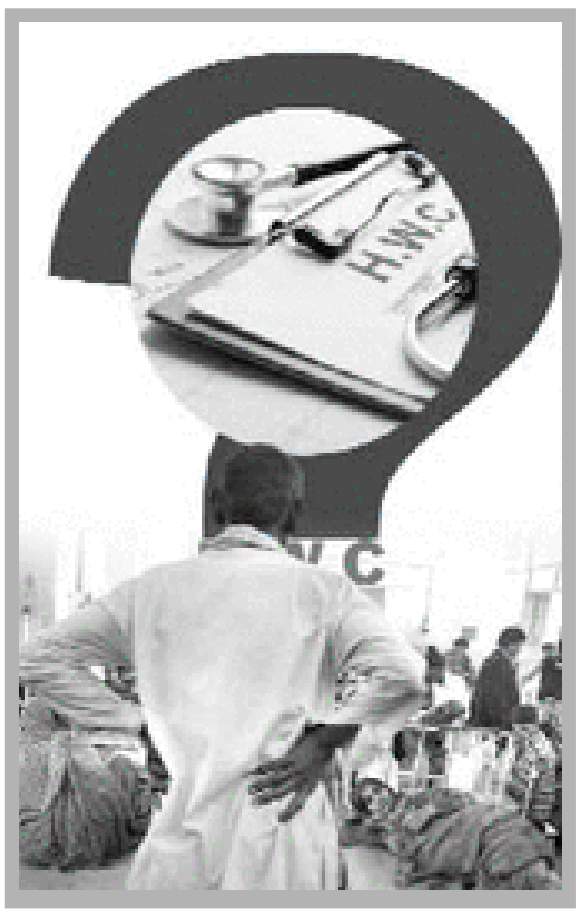

एनएचपी 2017, जो इस चुनौती को आंशिक रूप से स्वीकार करती है, में प्रस्ताव है कि ''सरकार समूचे देश में लोगों को समग्र स्वास्थ्य सेवाएं मुहैया कराने के लिए ऐसे स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य सुधार केंद्रों की स्थापना हेतु निजी क्षेत्र का सहयोग लेगी।' लेकिन शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं के लिए जरूरी है कि सरकार पूंजी निवेश करे। पूरी तरह निजी क्षेत्र पर निर्भर न रहे। शहरी क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य के लिए पूंजी और परिव्यय किए जाने की जरूरत है, और एचडब्ल्यूसी की स्थापना किए जाने का फैसला एक बड़ा अवसर है। समूचे देश में एचडब्ल्यूसी स्थापित किए जाना एक वृहत कार्य है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय और उससे संबद्ध संस्थानों जैसे सरकारी संस्थानों के पास हो सकता है कि समय और समुचित क्षमता की कमी हो। बेहतर होगा कि कुल बजट का 1-2त्न हिस्सा एचडब्ल्यूसी की स्थानपा के लिए आवंटित किया जाए ताकि एक स्वतंत्र निगम का गठन हो सके। यह समयबद्ध गतिविधियों को क्रियान्वित करने के काम को अंजाम दे सकेगा। निगम की बंदोबस्ती पेशेवरों/पेशेवर एजेंसियों को सौंपी जा सकती है, जो इस बाबत प्रक्रिया का अच्छे से निर्देशन कर सकेंगे। स्वच्छ भारत मिशन के लिए अंगीकार की गई प्रक्रिया की भांति मेडिकल कॉलेज भी एचडब्ल्यूसी की स्थापना के कार्य की निगरानी में हाथ बंटा सकते हैं। देश ने नीति-निर्माताओं को जब-तब बड़ी घोषणाएं करते देखा है। इनमें से बहुत थोड़ी का ही क्रियान्वयन हो सका है। देखते हैं कि एचडब्ल्यूसी ऐसी ही कोईघोषणा तो साबित नहीं हो जाएगी जिसका न तो कोई नतीजा निकला, न कोई अपेक्षित परिणाम? क्या यह वास्तव में भारतीयों के जीवन पर सकारात्मक असर डालेगी?

एचडब्ल्यूसी की स्थापना का फैसला न केवल प्राथमिक देखभाल को मजबूती देने वाला है, बल्कि यह बचाव और प्रेरक देखभाल और सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं की राह को प्रशस्त करेगा। यह वह रास्ता है जो ज्यादा से ज्यादा लोगों तक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाएगा और देश को अपने सभी नागरिकों के लिए स्वास्थ्य सेवाएं मुहैया कराने संबंधी रणनीति बनाने में सहायक होगा। एनएचपी, 2017 का यही उद्देश्य है।

चलते चलते

भगवान

पहले जिंदगी और मौत के मामले में भगवान की मर्जी चलती थी, अब डॉक्टर की मर्जी चलती है। पहले डॉक्टर मरीज के नाते-रितेदारों को कहता था कि भगवान से दुआ करो कि मरीज अच्छा हो जाए। अब भगवान की बड़ी इच्छा होती है यह कहना कि भैया मुझे छोड़ो और डॉक्टरों के पांव पकड़ लो क्योंकि आजकल वही तय करते हैं कि कौन जिंदा रहेगा।

भगवान तो नहीं होता, पर लोग उसे भगवान का रूप जरूर मानते हैं। पर इधर भगवान और डॉक्टर में एक फर्क आ गया। फर्क तो खैर पहले भी था। पहले जिंदगी और मौत के मामले में भगवान की मर्जी चलती थी, अब डॉक्टर की मर्जी चलती है। पहले डॉक्टर मरीज के नाते-रितेदारों को कहता था कि भगवान से दुआ करो कि मरीज अच्छा हो जाए। अब भगवान की बड़ी इच्छा होती है यह कहने कि भैया मुझे छोड़ो और डॉक्टरों के पांव पकड़ लो क्योंकि आजकल वही तय करते हैं कि कौन जिंदा रहेगा, कौन रवाना? पूरी व्यवस्था बदल चुकी है। जहां भगवान स्वर्ग में बैठा तय करता है कि कौन जिंदा रहेगा और कौन उसे प्यारा होगा। वहीं प्राइवेट अस्पतालों में बैठे डॉक्टर भगवान की इस व्यवस्था को कतई नहीं मानते। मानने से एकदम इंकार कर देते हैं। बेचारे भगवान को डर लगने लगा है कि एक दिन आएगा जिस दिन प्राइवेट अस्पताल वाले उसे खुली चुनौती दे देंगे कि भगवान कौन होता है तय करने वाला कि कौन जिंदा रहेगा और कौन मरेगा। यहां हम तय करते हैं कि कौन जिंदा रहेगा और कौन मरेगा। वे जिंदा को मरा हुआ और मरे हुए को जिंदा घोषित कर सकते हैं। भगवान से बड़े हो चुके हैं। इधर दिल्ली में यह खूब हो रहा है, जरूर दूसरी जगहों पर भी हो रहा होगा।पूरी व्यवस्था गड़बड़ाई हुई है साहब। यमराज अपने दूतों को भेजते हैं, लोगों की जान लेने के लिए। लेकिन आईसीयू के गेट पर बैठा निजी अस्पताल का बाउंसर साफबोल देता है-बंदा अभी जिंदा है, तू कहां घुसा चला आ रहा है। दूत उसे यमराज के सारे कागजात दिखाता है कि भैया, देर हो रही है मुझे ले जाने दे। लेकिन बाउंसर साफमना कर देता है-अरे, बावलीबूच अभी तो बिल पचास लाख भी ना पंहुचा। जा दो-चार दिन और इंतजार कर। कम से कम एक करोड़ तो पंहुचने दे यार। अब दूत न उसे समझा सकता है कि वह इंतजार नहीं कर सकता और न यमराज को समझा सकता है कि उसे किसलिए देर हो गई। दो-चार दिन बाद दूत जब फिर पहुंचता है, तो बाउंसर फिर डांट देता है-जाकर पहले बिल जमा करा दे। फिर चाहे जान ले, चाहे आत्मा ले और चाहे पूरा शरीर ले जा हमें क्या। खुद यमराज घबराए हुए हैं कि इस नई व्यवस्था में उनकी हैसियत क्या है?

मुद्दा

''कोई समय बर्बाद न करें''

तमिलनाडु के वैल्लोर जिले में एक माध्यमिक स्कूल की चार छात्राओं ने खुदकुशी कर ली। इन चार छात्राओं सहित सात अन्य को विद्यालय से निकाल देने की धमकी दी गयी थी। इनका अपराध यह था कि वे कक्षा के ''नियम' को तोड़ कर बातचीत कर रही थीं। परीक्षा में भी इनका प्रदर्शन अच्छा नहीं था। इन तथाथित ''गलतियों' की सजा के रूप में इन्हें कहा गया था कि वे अपने अभिभावकों को विद्यालय की प्रधानाचार्या से मिलने को कहें ताकि इनकी इस ''स्थिति' के बारे में अभिभावकों से बात की जा सके। यह घटना शिक्षा में व्याप्त अनुशासन और दंड की गंभीर समस्या की दु:खद परिणति है। शिक्षिका ने जब कक्षा में दो छात्रों को बात करते देखा तो निगरानी के अधिकार का प्रयोग कर प्रधानाध्यापिका से शिकायत की। शिक्षिका को विद्यार्थियों की यह गलती इतनी गंभीर लगी कि उसने अपने शक्ति-क्षेत्र के बाहर जाकर प्रधानाचार्या को उक्त प्रकरण में शामिल किया। इन छात्राओं के माध्यम से प्रधानाचार्या ने सभी विद्यार्थियों को आगाह किया। इस दौरान पीड़ित छात्राओं के लिए ''डायन' जैसे शब्द प्रयुक्त किये गए। अक्सर इस तरह के औजारों को बदमाश बच्चों को नियंत्रित करने का तरीका बताया जाता है। जबकि वास्तविकता है कि यह तरीका अनुशासन के अनुचरों और परिस्थितियों को दूर करने का प्रयास है जो एक बड़े या ताकतवर और छोटे या कमजोर के बीच आज्ञापालक और अनुगामी होने के संबंध को कमजोर कर सकते हैं। इसी प्रवृत्ति का एक अन्य उदाहरण विद्यार्थियों को कम तेज और अधिक तेज जैसी रैंक देना है। रैंक में अंतर का कारण अनुशासित होने को बताना है। इस बहाने विद्यार्थियों के बीच बातचीत को हतोत्साहित किया जाता है और लगातार उन्हें अनुशासन से विचलन का बोध कराया जाता है। आप किसी भी स्कूल और कक्षा में ''कोई समय बर्बाद न करें', ''कोई आलसी न हो' और ''सभी काम समय पर जमा करें' जैसे वाक्यांशों का प्रयोग देख सकते हैं। ये वाक्यांश विद्यार्थियों को ध्यान दिलाते रहते हैं कि उन्हें अनुशासन के नियम से विचलित नहीं होना है। इसी तरह नकारात्मक पहचानों और ठप्पों का प्रयोग जैसे- आलसी, कामचोर, बातूनी और बैकबेंचर कहना एक अन्य औजार हैं जो निष्क्रियता को बढ़ावा देता हैं। ऐसे विशेषणों का प्रयोग करने वाले इन्हें विद्यार्थियों को ''ठीक करने के' का उपकरण मानते हैं। सवाल है कि असफल घोषित करने के ये ठप्पे जो विद्यार्थियों को अपमानित करते हैं क्या वे सकारात्मक हो सकते हैं? इस अपमान जन्य वाचिक और मानसिक हिंसा की प्रतिक्रिया में आत्महत्या की घटना हुई। यह उल्लेखनीय है कि नियंतण्र का कठोर ताना-बाना न केवल संस्था की संस्कृति में स्वीकार्य है बल्कि इसकी गहनता पद के अनुसार घटती-बढ़ती है। इसी कारण शिक्षिका ने एक सीमा तक सजा दी और विद्यालय से निकालने जैसी कठोर सजा के लिए प्रधानाध्यापिका को शामिल किया। विडंबना देखिए जिन शिक्षकों को मार्गदशर्क और अभिभावक के स्थान पर रखते हैं, वे ऐसे व्यवहारों को सीखने की शर्त मानते हैं। अनुशासन के नाम पर किसी की आवाज को दबा देना न मालूम शिक्षा और शिक्षण के किस लक्ष्य की पूर्ति करता है और न जाने क्यों आज भी हमारे दिमाग में अच्छे विद्यार्थी की कसौटी का मुख्य निर्धारक उसका आज्ञापालक और अनुगामी होना है?

अनुशासन का यह पाठ स्कूल के रास्ते घर-परिवार तक पहुंच चुका है। आजकल ''शिक्षित' माता-पिता भी सीखने और अनुशासित रहने को एक दूसरे का पर्यायवाची मान रहे हैं। अनुशासन की यह कैंची स्वाभाविकता और नैसर्गिक प्रतिभा के पर कतरने को उतावली है। इन प्रभावों में हम ऐसे समाज के सदस्य बन रहे हैं जो अनुशासन की ढाल से अपने अहं को तुष्ट करना चाहता है, अज्ञानता को छुपाना चाहता है,क्यों अनुशासन का चाबुक स्वतंत्रता और व्यक्ति की गरिमा के मूल्य को हांक रहा है? क्यों विद्यालय जैसी संस्थाएं जेल, अस्पताल और पागलखाने जैसी जान पड़ रही हैं?

'मन की बात

यूरिया से जमीन को गंभीर नुकसान पहुंचता है, संकल्प लेना चाहिए कि 2022 में देश जब आजादी की 75वीं वर्षगांठ मनाए, तब यूरिया का उपयोग आधा हो। 'मन की बात के जरिए प्रधानमंत्री की चिंता व सुझाव ने खेत और जमीन के नुकसान को फिर चर्चा में ला दिया है! लगातार कृषि कर्मण अवॉर्ड जीत रहे मध्यप्रदेश में भी कई अवसरों पर वैज्ञानिक तरीकों से यह सिद्ध हो चुका है कि यूरिया का आवश्यकता से अधिक उपयोग, जमीन को नुकसान पहुंचा रहा है! आंकड़ों के आधार पर समझें तो वर्ष 1950 में देश में 5 करोड़ मीट्रिक टन अनाज की पैदावार के लिए 540 मीट्रिक टन रासायनिक खाद (फर्टिलाइजर) का इस्तेमाल होता था, अब 26.30 करोड़ मीट्रिक टन अनाज के लिए 90 हजार मीट्रिक टन फर्टिलाइजर का उपयोग किया जा रहा है! उत्पादन की अंधी दौड़ में शामिल ये खेती-किसानी कहां जाकर रुकेगी, अनुमान ल गाना अभी तो मुश्किल है! इसीलिए, अब देसी खाद की तरफमुड़ने पर ज्यादा जोर दिया जा रहा है। एक उदाहरण देवास जिले में नेमावर से 5 किमी दूर बजवाड़ा गांव में 66 वर्षीय दीपक सचदेव जैविक कृषि के जरिए सब्जियां, फल, मसाले, अन्न् और औषधियों की खेती करते हैं! डेढ़ एकड़ में फैला उनका खेत 135 प्रकार की जैविक खेती का आदर्श उदाहरण बन गया है! अपने इसी खेत में वे लोगों को केमिकल और पेस्टीसाइड्स के बिना खेती करना भी सिखाते हैं! कृषि विभाग के साथ मिलकर सेंटर ऑफएक्सीलेंस मैटेरियल साइंसेस (नैनो मैटेरियल्स) के प्रिंसिपल को-आर्डिनेटर प्रोफेसर नकवी (अब रिटायर्ड) और वैज्ञानिक डॉ. ब्रिजराज सिंह ऐसा शोध कर रहे हैं, जिसमें यूरिया सहित किसी अन्य खाद की जरूरत ही नहीं पड़े और 'स्मार्ट खाद की कम मात्रा से पैदावार भी बढ़ जाए! डॉ. सिंह कहते हैं - सरकार यूरिया का उपयोग आधा करना चाहती है और कृषि विज्ञान कहता है फसल के लिए जितना नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश (प्राथमिक खाद) चाहिए वो यूरिया का उपयोग घटाकर संभव नहीं! शोध में यह सामने आया कि खेत में डाले जा रहे यूरिया का 30-32 फीसदी नाइट्रोजन ही पेड़-पौधे इस्तेमाल करते हैं! इससे यूरिया आयात करने के लिए सरकार के खाते से जा रही विदेशी मुद्रा और किसानों की जमा पूंजी बेकार हो रही है! इसी चिंता को चुनौती बनाकर शोध शुरू किया कि नैनो न्यूट्रिएंट्स से स्मार्ट खाद बनाया जाए जिससे नाइट्रोजन सहित 17 पोषक तत्व भी एक साथ मिल जाएं और उपयोग क्षमता भी 80-85 फीसदी हो। इसे यूं भी समझें, यदि एक एकड़ फसल में 10 किलो खाद चाहिए तो नैनो फॉर्मूलेशन से बने खाद से 200 मिली से ही पर्याप्त पूर्ति हो जाएगी। समझा जा सकता है इससे खेती की लागत काफी घट जाएगी और अधिक खाद से बिगड़ रही पर्यावरण की सेहत भी सुधर जाएगी। प्रयोग में लगी टीम का दावा है उनके स्तर पर शोध सफल है और परिणाम भी काफी उत्साह बढ़ाने वाले आ रहे हैं! खाद के नैनो फॉर्मूलेशन का पेटेंट करवाने के बाद यूनिवर्सिटी की ओर से शोध पत्र केंद्र सरकार और कृषि अनुसंधान केंद्र को भेजा जाएगा। ठीक इसी तरह भोपाल का इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफसॉइल साइंस भी यूरिया का विकल्प तलाशने के साथ इस काम में जुटा है कि मौजूदा खाद्यान के उत्पादन को बनाए रखते हुए नया रास्ता खोजा जाए! दो दिन बाद (5 दिसंबर) हम विश्व मृदा दिवस मनाने जा रहे हैं, इस दिन केवल इतना संकल्प तो ले ही सकते हैं कि शोध के 'सार्थक परिणाम खेतों तक पहुंचाने के बीच आने वाली सरकारी व्यवस्था लंबी और जटिल नहीं होगी!

जमशेदपुर ने डायनामोज को हरा दर्ज की पहली जीत

नयी दिल्ली। जमशेदपुर एफसी ने इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) मुकाबले में यहां दिल्ली डायनामोज को 1-0 हराकर टूर्नामेंट की अपनी पहली जीत दर्ज की। मैच का एकमात्र गोल जमशेदपुर के नाइजीरियाई खिलाड़ी इजू अजूका ने 60वें मिनट में किया। आईएसएल में पहली बार भाग ले रहे जमशेदपुर की यह चार मैचों में पहली जीत है। इससे पहले उसने तीनों मैच ड्रा खेले थे। डायनामोज की यह लगातार तीसरी हार है। उन्होंने सत्र की शुरूआत एफसी पुणे सिटी पर जीत से की थी लेकिन इसके बाद लगातार तीन मैच गंवा बैठे। घरेलू मैदान पर यह उसकी लगातार दूसरी हार है। प्रदूषण की चिंता के बीच खेले गये इस मैच में स्थिति पहले से थोड़ी बेहतर रही। यहां के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में आठ हजार दर्शक मौजूद थे। मैच के पहले हाफ में दोनों टीमें में से कोई भी टीम गोल करने में कामयाब नहीं रही। डायनामोज की टीम मैच के 60 प्रतिशत समय गेंद अपने पाले में रखने में कामयाब रही लेकिन एक अस्वीकृत गोल के अलावा उनका पास दिखाने के लिये कुछ नहीं रहा। 13वें मिनट में टीम के कप्तान कालू ऊचे ने गोलकर घरेलू दर्शकों को खुशी मनाने का मौका दिया लेकिन ऑफ साइड के कारण रेफरी ने गोल को अमान्य करार दिया। मैच का पहला हाफ थोड़ा नीरस रहा क्योंकि दोनों टीमें गोल करने के ज्यादा मौके नहीं बना पायी। दूसरे हाफ में मैच का रोमांच बढा लेकिन इस हाफ में शुरू से जमशेदपुर की टीम डायनामोज पर भारी रही। मैच के 57वें मिनट में प्रतीक चौधरी मौके को भूनाने में कामयाब नहीं रहे। इसके बाद आंद्रे बिके को पेनल्टी किक मिला लेकिन दिल्ली के गोलकीपर अलबिनो गोमेस ने उसे रोक दिया। हालांकि इसके बाद जमशेदपुर को गोल के लिये ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा। इस मैच के बाद जमशेदपुर के चार मैचों में एक जीत और तीन ड्रा से छह अंक है जबकि डायनामोज के इतने ही मैचों में एक जीत तीन हार से तीन अंक है।

अदिति अशोक दुबई लेडीज क्लासिक में 29वें स्थान पर

दुबई। भारतीय गोल्फर अदिति अशोक यहां ओमेगा दुबई लेडीज क्लासिक टूर्नामेंट के पहले दौर में एक अंडर 71 के औसत प्रदर्शन से संयुक्त रूप से 29वें स्थान पर है। एमिरेट्स गोल्फ क्लब में खेले जा रहे मुकाबले में अदिति ने नौवें, 10वें और 14वें होल में बर्डी खेल अपने स्कोर को एक अंडर रख सकीं। इस साल अबु धाबी में फातिमा बिंत मुबारक गोल्फ में जीत दर्ज करने वाली अदिति ने तीन बर्डी के मुकाबले एक बोगी किया। थाईलैंड की सुपमास सांगछान पांच अंडर 67 के स्कोर के साथ शीर्ष पर है।

अब शारापोवा के पूर्व कोच से खेल की बारीकियां सीखेंगी कोंटा

लंदन। ब्रिटेन की नंबर एक महिला टेनिस खिलाड़ी जोहाना कोंटा अब मारिया शारापोवा के पूर्व कोच माइकल जॉयस से खेल की बारीकियां सीखेंगी। कोंटा ने अमेरिका के माइकल जॉयस को 2018 के नए सत्र के लिए अपना कोच नियुक्त किया है। वह अक्टूबर में अपने कोच बेल्जियम के विम फिसेटे से अलग हो गई थीं। 26 साल की कोंटा का वर्ष 2017 में प्रदर्शन बेहतरीन रहा और उन्होंने सिडनी इंटरनेशनल और मियामी ओपन में खिताब जीते और कॅरियर की सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग पर पहुंचकर दुनिया की चौथे नंबर की खिलाड़ी बन गयीं, लेकिन आखिरी सत्र में चोट के कारण वह रैंकिंग में फिसल गईं और डब्ल्यूटीए फाइनल्स में जगह नहीं बना सकीं। ब्रिटिश टेनिस खिलाड़ी ने अमेरिका के 44 वर्षीय जॉयस को अपना कोच नियुक्त किया है जो पूर्व नंबर एक खिलाड़ी मारिया शारापोवा के कोच रह चुके हैं और उन्हें दो ग्रैंड स्लेम तक पहुंचाने में मदद की थी। इसके अलावा वह मौजूदा वर्ष में विक्टोरिया अजारेंका की कोचिंग टीम का भी हिस्सा रहे। उन्होंने गत सप्ताह ही बेलारूसी खिलाड़ी का साथ छोड़ा है। कोंटा ने एक बयान में कहा मैं बहुत खुश हूं कि माइकल जॉयस के साथ मैं 2018 सत्र की शुरूआत करूंगी। माइकल बेहतरीन कोच हैं और अपार अनुभव है। मैं उनके साथ काम करने को लेकर उत्साहित हूं। मौजूदा वर्ष कमाल का रहा था और उम्मीद है कि आगे का साल और भी अच्छा होगा। ब्रिटिश खिलाड़ी अपने नए सत्र की शुरूआत ब्रिसबेन इंटरनेशनल से करेंगी जो 31 दिसंबर से शुरू होगा। इसके अलावा चेक गणराज्य की बारबोरा स्ट्राइकोवा ने हमवतन डेविड कोटिजा को अपना नया कोच चुना है। स्ट्राइकोवा ने अक्टूबर में लिंज ओपन में खिताब जीता था। वह इस वर्ष कोच टॉमस ऋूपा से अलग हो गयी थीं। 31 वर्षीय चेक खिलाड़ी ऑकलैंड क्लासिक से नये सत्र की शुरूआत करेंगी।

यह हमारा अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था: शोर्ड मारिन

भुवनेश्वर। भारत की हाकी विश्व लीग क्वार्टर फाइनल में बेल्जियम पर पेनल्टी शूट आउट में 3-2 से जीत को अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करार देते हुए भारतीय कोच शोर्ड मारिन ने यहां कहा कि टीम लगातार अपने प्रदर्शन में सुधार कर रही है। दोनों टीमें नियमित समय तक 1-1 से बराबरी पर थी जिसके बाद पेनल्टी शूटआउट का सहारा लिया गया। भारत ने सडन डेथ तक खिंचे मैच में जीत दर्ज करके सेमीफाइनल में प्रवेश किया। मारिन ने मैच के बाद कहा, ''बेल्जियम दुनिया की सर्वश्रेष्ठ टीमों में से एक है और उसके खिलाफ जिस तरह का खेल हमने दिखाया उससे मैं काफी खुश हूं। '' उन्होंने कहा, ''हमारे खेल में निरंतर निखार आ रहा है और उसका एक नमूना देखने को मिला। यह हमारा (इस टूर्नामेंट में) अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था। ''भारत ने आज पेनल्टी कार्नर में भी अच्छा प्रदर्शन किया तथा चार में से दो पेनल्टी कार्नर को गोल में बदला। इसके अलावा पेनल्टी शूट आउट में भी इस विभाग में पिछले दिनों की गयी कड़ी मेहनत का सकारात्मक परिणाम देखने को मिला।

विराट कोहली ने टेस्ट रैंकिंग में दूसरा स्थान हासिल किया

दुबई (एजेंसी)।

श्रीलंका के खिलाफ तीसरे टेस्ट में अपने करियर की 243 रन की सर्वश्रेष्ठ पारी खेलने वाले भारतीय कप्तान विराट कोहली ने तीन पायदान की छलांग से बल्लेबाजों की आईसीसी टेस्ट रैंकिंग में दूसरा स्थान हासिल किया। कोहली ने इस दोहरे शतक के अलावा दूसरी पारी में 50 रन की पारी खेली जिससे उन्होंने सीरीज में 610 रन जुटाये। भारत ने यह श्रृंखला 1-0 से जीती, जिसमें कोलकाता और नयी दिल्ली में क्रमश- पहला और तीसरा टेस्ट ड्रा पर समाप्त हुआ।

कोहली ने लगातार दोहरे शतक जमाये और लगातार तीन मैचों में शतकीय पारी खेली। वह सीरीज से पहले रैंकिंग में छठे स्थान पर थे लेकिन उन्होंने 152-50 के औसत से शानदार प्रदर्शन करते हुए डेविड वार्नर, चेतेश्वर पुजारा, केन विलियम्सन और जो रूट को पछाड़ दिया। आईसीसी बयान के अनुसार हालांकि आस्ट्रेलियाई कप्तान स्टीव स्मिथ और कोहली के बीच में 45 अंक का अंतर है, कोहली सभी तीनों प्रारूपों में शीर्ष पर पहुंचने पर निगाहें लगाये होंगे क्योंकि वह वनडे और टी20 में अभी नंबर एक स्थान पर बने हुए हैं।

स्मिथ पिछले हफ्ते 941 अंक पर पहुंचे थे, अब उनके 938 अंक हैं जबकि कोहली के 893 अंक हैं। आस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग दिसंबर-जनवरी 2005-06 में एक ही समय में सभी तीनों

प्रारूपों में शीर्ष पर रहे थे जबकि हमवतन खिलाड़ी मैथ्यू हेडन एक अन्य बल्लेबाज हैं जो सभी तीनों प्रारूपों में शीर्ष पर थे। हालांकि स्मिथ ने कोहली पर थोड़ी बढ़त बनायी हुई, लेकिन दूसरे से पांचवें स्थान के लिये प्रतिस्पर्धा काफी दिलचस्प होगी। इस टेस्ट से पहले दूसरी रैंकिंग के पुजारा और पांचवीं रैंकिंग पर काबिज कोहली के बीच केवल 11 अंक का अंतर था। लेकिन इस प्रदर्शन के बाद यह अंतर अब थोड़ा बढ़कर 28 अंक का हो गया, जिसमें दूसरी रैंकिंग के कोहली और पांचवीं रैंकिंग के विलियम्स के बीच 28 अंक का हो गया है।

अन्य भारतीयों में सलामी बल्लेबाज मुरली विजय (तीन पायदान के फायदे से 25वें) और मध्यक्रम बल्लेबाज रोहित शर्मा (छह पायदान की छलांग से 40वें स्थान) ऊपर बढ़ने वाले अन्य बल्लेबाज हैं। पुजारा दो पायदान खिसककर चौथे स्थान पर पहुंच गये हैं जबकि रविंद्र जडेजा गेंदबाजों की रैंकिंग में एक स्थान गंवाकर तीसरे स्थान पर पहुंच गये हैं। आर अश्विन चौथे स्थान पर कायम हैं। आल राउंडर खिलाड़ियों की सूची में जडेजा दूसरे स्थान पर हैं जबकि अश्विन एक पायदान गंवाकर चौथे स्थान पर पहुंच गये हैं।

श्रीलंका के लिये कप्तान दिनेश चांदीमल को आठ पायदान का फायदा हुआ जिससे वह नौंवे स्थान पर पहुंच गये, उन्होंने सीरीज में 366 रन बनाये थे, जिसे वह पहली बार शीर्ष 10 में पहुंचे। आल राउंडर एंजेलो मैथ्यूज सात पायदान के फायदे से 23वें स्थान पर जबकि धनंजय डि सिल्वा नौ पायदान के लाभ से 47वें स्थान पर पहुंचे। आईसीसी की टेस्ट रैंकिंग में भारत ने महज एक अंक गंवाया है जबकि वह रैंकिंग में दक्षिण अफ्रीका से आगे शीर्ष पर कायम है तो वहीं श्रीलंकाई टीम सीरीज से पहले के 94 अंक से छठे स्थान पर बरकरार है।

सडन डैथ में बेल्जियम को हराकर भारत सेमीफाइनल में

भुवनेश्वर (एजेंसी)।

रोमांच की पराकाष्ठा तक पहुंचे मुकाबले में भारत ने सडन डैथ में हरमनप्रीत सिंह के गोल के दम पर यहां खिताब के प्रबल दावेदार बेल्जियम को हराकर हाकी विश्व लीग फाइनल के अंतिम चार में प्रवेश किया। बेहतरीन हाकी का मुजाहिरा पेश करने वाले मैच में पासा पल पल पलटता रहा और दर्शकों का मूड भी। निर्धारित समय तक स्कोर 3 -3 से बराबर रहने के बाद शूटआउट में भी स्कोर 2 - 2 था। इसके बाद सडन डैथ में हरमनप्रीत ने भारत के लिये गोल दागा जबकि आर्थर वान डोरेन बेल्जियम के लिये गोल नहीं कर सके।

शूटआउट में भारत के लिये ललित उपाध्याय और रूपिंदर पाल सिंह ने गोल दागे जबकि हरमनप्रीत, सुमीत और आकाशदीप के निशाने चूके । वहीं बेल्जियम के लिये आर्थर और जान डोमैन ने गोल किये। 'इंडिया जीतेगा', 'चक दे इंडिया', 'इंडिया इंडिया' के नारे लगाते कलिंगा स्टेडियम पर जमा हजारों दर्शकों के सामने इस मैच में रोमांच और जुझारूपन की जबर्दस्त बानगी मिली। बेल्जियम जहां लीग चरण में अपराजेय थी, वहीं भारत ने एक भी मैच नहीं जीता था। हाफटाइम तक स्कोर गोलरहित बराबरी पर रहने के बाद भारत ने ब्रेक के बाद पहले ही मिनट में खाता खोला जब एस वी सुनील ने सर्कल के भीतर आकाशदीप सिंह को पास दिया और उनसे गेंद लेकर गुरजंत सिंह ने बेहतरीन गोल को अंजाम तक पहुंचाया। इसके चार मिनट बाद ही हरमनप्रीत ने पेनल्टी कार्नर पर गोल करके भारत की बढत दुगुनी कर दी। दो गोल से पिछड़ने के बाद सकते में आई बेल्जियम टीम ने 39वें मिनट में जवाबी हमलों पर पेनल्टी कार्नर बनाया। इसे लोइक लुपार्ट ने गोल में बदलकर टीम को मैच में लौटाया। उन्होंने 46वें मिनट में एक और पेनल्टी कार्नर को गोल में तब्दील करके बेल्जियम को बराबरी पर ला दिया । इसके साथ ही मैदान में जमा हजारों दर्शकों को मानो सांप सूंघ गया। भारतीयों ने हालांकि हार नहीं मानते हुए हमले जारी रखे और अगले ही मिनट इसका परिणाम पेनल्टी कार्नर के रूप में मिला। रूपिंदर ने इसे गोल में बदलकर माहौल फिर जीवंत कर दिया। बेल्जियम ने हालांकि 57वें मिनट में सेड्रिक चार्लियेर के गोल के दम पर फिर वापसी करके मैच को शूटआउट की ओर धकेला।

इससे पहले लीग चरण से सबक लेते हुए भारत ने इस मैच में काफी आक्रामक आगाज किया । गेंद पर नियंत्रण और विरोधी गोल पर हमलों के मामले में भारतीय टीम बेल्जियम पर हावी रही । दूसरे ही मिनट में अनुभवी स्ट्राइकर एस वी सुनील भारत को बढत दिला देते लेकिन चूक गए । भारत को तीन मिनट बाद मैच का पहला पेनल्टी कार्नर मिला लेकिन इस पर हरमनप्रीत गोल नहीं कर सके। इस बीच भारत के तेवरों से सन्न बेल्जियम ने जवाबी हमले बोलने शुरू किये। अब तक अडिग दिख रहे भारतीय डिफेंस को भेदते हुए उसने दसवें मिनट में गेंद गोल के भीतर डाल दी लेकिन भारत के वीडियो रेफरल लेने के बाद इस गोल को अमान्य करार दिया गया। दूसरे क्वार्टर के तीसरे ही मिनट में गुरजंत सिंह ने डी के भीतर सुनील को बेहतरीन पास दिया । गेंद से दूर खड़े सुनील ने उसे लपका भी लेकिन गोल के दाहिने ओर से उनका शाट बाहर निकल गया। पिछले मैचों में आखिरी मिनटों में गोल गंवाने के कारण आलोचना झेल रहा भारतीय डिफेंस पहले हाफ में काफी चुस्त दिखाई दिया। इस टूर्नामेंट के जरिये आठ महीने बाद भारतीय टीम में लौटे रूपिंदर पाल सिंह और वरूण कुमार ने बेल्जियम के कई मूव नाकाम किये।

भारत के पास दक्षिण अफ्रीका में पहली सीरीज जीतने का बढ़िया

नयी दिल्ली (एजेंसी)।

भारत के पूर्व कप्तान राहुल द्रविड़ को लगता है कि टीम में प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को देखते हुए विराट कोहली की अगुवाई वाली टीम के पास अगले महीने दक्षिण अफ्रीका में पहली टेस्ट सीरीज जीतने का अच्छा मौका होगा। द्रविड़ ने कहा कि मौजूदा भारतीय टीम के पास दक्षिण अफ्रीका में तीन मैचों की सीरीज जीतने के लिये सभी विभागों में बेहतरीन खिलाड़ी मौजूद हैं। इस टेस्ट सीरीज की शुरूआत पांच जनवरी से केप टाउन में होगी। हालांकि दुनिया की नंबर एक टेस्ट टीम ने लगातार रिकार्ड नौ सीरीज जीती हैं, उसे सीरीज के शुरूआती मैच से पहले केवल एक अभ्यास मैच खेलना है।

उन्होंने कहा, ''मुझे लगता है कि मौजूदा टीम की मजबूती को देखते हुए हमारे पास इस बार जीतने का अच्छा मौका है। ''उन्होंने कहा, ''हमारे पास कुछ बेहतरीन तेज गेंदबाज हैं, अगर जरूरत पड़ती है तो हमारे पास आल राउंडर (हार्दिक पंड्या) को खिलाने का मौका है। हमारे पास जडेजा और अश्विन के रूप में बेहतरीन स्पिनर हैं। ''द्रविड़ ने कहा, ''मुझे यह चीज भी रोमांचित करती है कि हमारे सभी बल्लेबाज पहले भी दक्षिण अफ्रीका जा चुके हैं और उनके पास 40-50 टेस्ट का अनुभव है। ''वह इस समय अंडर-19 और भारत ए टीमों को कोचिंग दे रहे हैं।

उन्होंने कहा, ''आपको ऐसे हालात में थोड़े भाग्य की भी जरूरत होती है। अगर यह हमारे हिसाब से रहता है तो मुझे अपने जीतने का पूरा भरोसा है। ''भारतीय टीम चैम्पियंस ट्राफी के बाद से लगातार क्रिकेट खेल रही हैं और कोहली के अलावा किसी ने भी दक्षिण अफ्रीका दौरे की तैयारी के लिये समय नहीं मिलने की शिकायत नहीं की। टीम 24 दिसंबर तक श्रीलंका के खिलाफ पूर्ण सीरीज समाप्त करेगी।

द्रविड़ ने कहा कि खिलाड़ियों के कंधों से अतिरिक्त भार खत्म करना अच्छा होगा। उन्होंने कहा, ''कार्यक्रम के लिहाज से टीम के लिये कुछ साल कठिन होते हैं और कुछ नहीं। खिलाड़ियों के ऊपर काफी दबाव होता है लेकिन सभी टीमों के लिये ऐसा है। लेकिन अगर हम संतुलन बिठा लेते हैं तो यह अच्छा होगा, हालांकि यह आसान काम नहीं है। ''कोहली ने हाल में द्रविड़ को पछाड़कर भारत के लिये सभी प्रारूपों में सबसे ज्यादा शतक जड़ने वाले खिलाड़ियों में दूसरे स्थान पर पहुंच गये, अब वह केवल महान खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर से पीछे हैं।

मनी को पीसीबी के मुआवजे के दावे से भारत-पाक क्रिकेट रिश्तों पर असर की चिंता

कराची। आईसीसी के पूर्व अध्यक्ष अहसान मनी को लगता है कि पीसीबी का भारतीय क्रिकेट बोर्ड के खिलाफ मुआवजे का दावा रिश्तों को खराब करेगा और इसका असर दोनों देशों के बीच क्रिकेट संबंधों पर भी पड़ेगा। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने बीसीसीआई के खिलाफ आईसीसी के समक्ष द्विपक्षीय क्रिकेट सीरीज समझौते का सम्मान नहीं करने के लिये सात करोड़ डालर का मुआवजा दायर किया है। मनी ने जियो सुपर चैनल से कहा, ''मैं इस मामले के परिणामों से चिंतित हूं, इसका नतीजा कुछ भी हो। मैं इस बारे में चिंतित हूं कि इससे लंबे समय में दोनों देशों के बीच क्रिकेट संबंधों पर असर पड़ेगा। ''उन्होंने कहा, ''मुझे लगता है कि पीसीबी ने आईसीसी में मुआवजे के दावे से पहले बातचीत के अन्य रास्तों, चर्चाओं और पर्दे के पीछे की कूटनीति के बारे में विचार नहीं किया। ''मनी ने कहा, ''मैं थोड़ा इंतजार करता और मुआवजे के दावे के विकल्प पर जाने से पहले सभी रास्तों पर ध्यान देने की कोशिश करता। ''मनी 2003 से 2006 तक आईसीसी के अध्यक्ष रहे थे। उन्होंने कहा कि यहां तक कि अगर पाकिस्तान अपने मुआवजे के दावे को जीत जाता है तो भी क्या गारंटी है कि भारत इस राशि को देने के लिये सहमत हो जायेगा। उन्होंने कहा, ''अगर पाकिस्तान अपने मुआवजे के दावे में सफल हो जाता है और भारत इस राशि को देने से इनकार कर देता है। तब पाकिस्तान को आईसीसी बोर्ड के पास जाना पड़ेगा और इससे दोनों देशों के बीच रिश्तों को नुकसान ही होगा।

आईएमए ने प्रदूषित वातावरण में मैच खेलने को लेकर बीसीसीआई को लिखा पत्र

नयी दिल्ली। भारतीय चिकित्सा संघ ने भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) को बताया है कि वह प्रदूषण के उच्च स्तर के बीच दिल्ली में भारत और श्रीलंका के बीच खेले जा रहे टेस्ट मैच को लेकर बहुत परेशान है। बीसीसीआई के कार्यवाहक अध्यक्ष सी के खन्ना और प्रशासकों की समिति के प्रमुख विनोद राय को लिखे एक पत्र में आईएमए अध्यक्ष डॉ- के के अग्रवाल ने कहा है कि भारत और श्रीलंका के क्रिकेट मैच से यह संदेश जाता है कि जब पीएम 2-5 का स्तर 300 से अधिक हो तो भी बच्चों के लिए क्रिकेट खेलना सुरक्षित है। गौरतलब है कि मैच के दौरान श्रीलंका के खिलाड़ियों को मैदान पर मास्क पहने हुए देखा गया। यह मैच कल संपन्न हुआ। पत्र में कहा गया है, ''जब खेलने की उचित परिस्थितियों पर निर्णय लिया जाता है तो बारिश और कम रोशनी पर विचार किया जाता है। हमारा सुझाव है कि मैच के लिए मानकों का आकलन करने में वातावरण के प्रदूषण को भी शामिल किया जाना चाहिए।'' अग्रवाल ने कहा कि वायु प्रदूषण से खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर असर पड़ता है। जब मिलीसेकंड और मिलीमीटर से अक्सर सफलता का निर्धारण होता है तो ऐसी स्थिति में वायु प्रदूषण खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर असर डालने वाला अहम कारक हो सकता है। उन्होंने चिकित्सा साहित्य और पत्रिकाओं का हवाला देते हुए कहा कि देश की राजधानी में हवा की खराब गुणवत्ता से फेफड़े और दिल की बीमारी का खतरा बढ़ सकता है।

राष्ट्रमंडल खेलों में कड़वी यादों को भुलाना है: दुतीचंद

भुवनेश्वर (एजेंसी)।

तीन बरस पहले राष्ट्रमंडल खेलों से ठीक पहले भारतीय टीम से बाहर किये जाने के बाद लंबी लड़ाई लड़कर ट्रैक पर लौटी फर्राटा धाविका दुती चंद का लक्ष्य अगले साल गोल्ड कोस्ट में होने वाले इन खेलों में पदक जीतकर कड़वी यादों को भुलाना है। दुती को 2014 राष्ट्रमंडल खेलों से ठीक पहले ऐन मौके पर हाइपरएंड्रोजेनिज्म (लिंग संबंधी कारणों) का हवाला देकर टीम से बाहर किया गया था। इसके बाद खेल पंचाट में अंतरराष्ट्रीय एथलेटिक्स महासंघ से लंबी लड़ाई जीतकर उसने ट्रैक पर वापसी की और इस साल भुवनेश्वर में हुई एशियाई एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में 100 मीटर फर्राटा तथा चार गुणा सौ मीटर रिले में कांस्य जीता। दुती ने कहा, %%अगले साल राष्ट्रमंडल खेल मेरा सबसे बड़ा लक्ष्य है क्योंकि यह सम्मान का मुकाबला भी है । इसी खेलों में पिछली बार मुझे बाहर कर दिया गया था । इसमें पदक जीतकर मुझे उन यादों को मिटाना है।''

ओडिशा की रहने वाली इस धाविका ने कहा,'' इसके अलावा एशियाई इंडोर खेल फरवरी में होने है जिसके जरिये बर्मिंघम में होने वाले विश्व इंडोर खेलों के लिये क्वालीफाई करना है।'' हैदराबाद में गोपीचंद अकादमी में अभ्यास कर रही दुती ने बताया कि जर्मन कोच राफ एकार्ट से मिले टिप्स से उनके खेल में काफी निखार आया है और उन्हें अगले साल होने वाले राष्ट्रमंडल और एशियाई खेलों में पदक की पूरी उम्मीद है। दुती के लिये जर्मन अकादमी से करार करने में राष्ट्रीय बैडमिंटन कोच पुलेला गोपीचंद ने अहम भूमिका निभाई थी और उनके साथ 2024 तक का करार है।

दुती ने कहा,'' एशियाई चैम्पियनशिप से पहले वह आये थे और उन्होंने मेरे खेल का विश्लेषण करके कोच को बताया था कि कमी कहां रह गई है ।वह अगले साल होने वाले अहम खेलों से पहले भी आयेंगे। उन्होंने वादा किया है कि अगर उनके बताये रास्ते पर चले तो राष्ट्रमंडल खेल और एशियाई खेलों में पदक पक्का है ।'' हैदराबाद में नागापुरी रमेश के मार्गदर्शन में अभ्यास कर रही दुती का विदेश में अभ्यास बेस बनाने का कोई इरादा नहीं है । उसने कहा,'' मैं साल में एक या दो महीने के लिये अपनी तकनीक को मांजने विदेश जा सकती हूं पर अभ्यास बेस मेरा हैदराबाद ही रहेगा।

भुवनेश्वर में भी सुविधायें अच्छी है लेकिन एथलेटिक्स में ग्रुप में अभ्यास होता है और मेरे लिये यहां अच्छा ग्रुप नहीं है।''

विश्व स्तरीय टूर्नामेंटों में भारत के ट्रैक और फील्ड में पिछड़ने के कारणों के बारे में पूछने पर दुती ने कहा, ''ऐसा नहीं है कि हमारी तैयारी खराब होती है या खेल में कमी रहती है लेकिन कई बार हालात बस में नहीं होते। जैसे अनुकूलन, मौसम वगैर लेकिन अच्छी बात यह है कि अब हम किसी भी टूर्नामेंट में काफी पहले जाने लगे हैं ताकि खुद को वहां के मौसम के अनुकूल ढाल सकें।%

'नीच' कहने वालों से गुजरात बदला लेगा-सूरत में मोदी

सूरत। पहले चरण के चुनाव प्रचार खत्म होने के पहले सूरत में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज यहां एक सभा में कांग्रेस पर तीखे प्रहार करते हुए कहा कि गुजरात का विकास कांग्रेस को दिखाई नहीं दे रहा है। ये जनसमुदाय ही बताएगा कि विकास होता क्या है? उन्होंने कहा कि चक्रवात ओखी आ रहा है, ऐसा माना जा रहा था। ऐसा कहने वाले कभी नहीं आते। इसे हम सबने देख ही लिया। आज समय से दो-ढाई घंटे लेट पहुंचे पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि चक्रवात के कारण एक दिन की सभा स्थगित कर दी गई, इसलिए आने में विलम्ब हुआ। उन्होंने मणिशंकर अय्यर के 'नीच' शब्द का जवाब देते हुए कहा कि मैंने एक काम भी ऐसा नहीं किया है। इसके बाद भी कांग्रेस के हताश लोग हमें नीच जाति का कह रहे हैं। इसका जवाब हमें किसी भी तरह से नहीं देना है। आप सबसे मेरा अनुरोध है कि गुजरातियों का अपमान करने वालों को आप सभी 9 और 14 दिसम्बर को कमल के निशान पर बटन दबाकर अपना विरोध दर्ज करें। इससे यह साबित हो जाएगा कि गुजरातियों को गाली देने का क्या हाल होता है? हमें मौत का सौदागर कहा गया, नीच जाति का कहा गया, इसका जवाब गुजराती पूरी शिद्दत से देंगे। कांग्रेस पर प्रहार करते हुए मोदी ने कहा कि कांग्रेस हर काम को अटकाने, लटकाने और भटकाने से काम किया। इसमें हमारी नर्मदा योजना का काम अटकाया, भटकाया और लटकाया था। हमारा स्केल बहुत ही बड़ा है। हमारा मंत्र है स्किल, स्केल और स्पीड, इसी नारे के साथ हमारी सरकार काम कर रही है। संडास का नाम इज्जत यूपी में दिया गया है। इसे कांग्रेस कभी समझ नहीं पाएगी। कांग्रेस हताश और निराश हो गई है। चारों तरफ से साफ हो गई है।

आफत को अवसर बनाते हैं

मोदी ने लिंबायत के नीलगिरी ग्राउंड में सभा को संबोधित करते हुए कहा कि मैं धरती मां का दूध पीकर बड़ा हुआ हूं। हमें आफत को अवसर में बदल देने वालों में से हैं। हम विकास को नई ऊंचाइयां देने वाले हैं। आफत को अवसर बनाने वाले हैं। सरकार आई, तब कितना बजट था और आज कितना बजट है, जिससे यह पूरी तरह से चारों ओर से विकास कर रहा है। कांग्रेस को आंकड़ों की भी समझ नहीं है। विकास के संबंध में कांग्रेस के दावे के संबंध में मोदी ने कहा कि आपके समय में टैक्स आते थे, पर वह रुपया कहां जाता था। सरकार की तिजोरी में वह रुपए आते ही नहीं थे, तो फिर जाते कहां थे? इसका जवाब दो। हम सत्ता में आए, तो उसके बाद का सूरत देख लो। आज सूरत दुनिया के नक्शे में चमक रहा है। हीरा ही नहीं, पूरी दुनिया में सूरत जिस तरह से चमका है, उसकी वजह उसका विकास ही है।

सूरत को इंटरनेशनल एयरपोर्ट कौन देगा-मोदी

सूरत के विकास के संबंध में मोदी ने कहा कि पहले लंगड़ी बिजली मिलती थी, हमने 24 घंटे बिजली दी। सूरत के गांव से लेकर शहर को चमकाया। यहां एयरपोर्ट पर फ्लाइट नहीं आती थी, परंतु अब इंटरनेशनल एयरपोर्ट की मांग की जा रही है, यह मांग कौन पूरी करेगा? इस पर दूसरी तरफ से आवाज आई-मोदी मोदी मोदी।

कांग्रेस का पोस्टर वार, अहमद पटेल बने सीएम पद दावेदार

वरिष्ट नेता अहमद पटेल ने झूठा करार

सूरत (ईएमएस)। गुजरात में चुनावी जंग जीतने के लिए राजनीतिक पार्टियों की तरफ से हर तरह की चाल चली जा रही है।सूरत में कुछ पोस्टर्स लगाए गए हैं,जिनमें यह दावा किया गया है कि अगर कांग्रेस चुनाव जीतती है तो वरिष्ठ नेता अहमद पटेल मुख्यमंत्री पद के दावेदार होंगे। लेकिन खुद अहमद पटेल ने इन पोस्टर्स को झूठा करार दिया है और कहा है कि वह मुख्यमंत्री पद के दावेदार नहीं हैं। पोस्टर्स चस्पा होने के बाद अहमद पटेल ने ट्वीट किया कि इस प्रकार के गलत पोस्टर लगाकर अफवाह फैलाना बीजेपी के हार के डर को दर्शाता है। क्या वे सच में इस प्रकार की गंदे तरीकों पर निर्भर हैं? मैं कभी भी मुख्यमंत्री बनने की रेस में नहीं था और ना ही रहूंगा। अहमद पटेल ने लिखा कि मुद्दे की बात यह है कि बीजेपी पिछले 22 साल के शासन में किए गए काम के मुद्दे से ध्यान भटकाना चाहती है। इसलिए झूठे हथकड़ों को अपना रही है। लेकिन गुजरात के लोगों ने इस बार अपना मन बना लिया है। गौरतलब है कि अभी कांग्रेस की ओर से किसी भी मुख्यमंत्री पद के दावेदार का ऐलान नहीं किया गया है। ऐसे में कांग्रेस का आरोप है कि बीजेपी इस प्रकार की अफवाह फैलाकर ध्यान भटका रही है। आपको बता दें कि दूसरी तरफ बीजेपी ने मौजूदा मुख्यमंत्री विजय रूपाणी और उपमुख्यमंत्री नितिन पटेल की अगुवाई में चुनाव लड़ने का ऐलान किया है। आपको बता दें कि कुछ ही समय पहले हुए राज्यसभा चुनाव में बीजेपी ने अहमद पटेल को हराने के लिए काफी जोर आजमाइश की थी। हालांकि,वोटों की गिनती 10 घंटे बाद हुई। देर रात 2 बजे आए परिणाम से कांग्रेस उम्मीदवार अहमद पटेल जीत सुनिश्चित हुई। जीत के बाद अहमद पटेल ने ट्वीट कर लिखा था कि सत्यमेव जयते। अहमद पटेल ने ट्वीट कर कहा कि यह सिर्फ मेरी जीत नहीं है। यह सत्ता, पैसे और स्टेट मशीनरी के दुरुपयोग की सबसे जबरदस्त हार है। मैं हर एक विधायक को धन्यवाद देना चाहता हूं,जिन्होंने धमकी और भाजपा के दबाव के बावजूद मेरे लिए वोट डाले। उन्होंने एक समावेशी भारत के लिए मतदान किया। आपको बता दें कि गुजरात में पहले चरण के लिए 19 जिलों की 89 सीटों पर 9 दिसंबर को वोट डाले जाएंगे। इसके लिए आज ही चुनाव प्रचार थम जाएगा। वहीं दूसरे चरण के लिए 14 दिसंबर को वोटिंग होगी जिसमें 14 जिलों की 93 सीटों पर वोट डाले जाएंगे।चुनाव के नतीजे 18 दिसंबर को हिमाचल प्रदेश के नतीजों के साथ ही आएंगे।

तोमर की रैली में उमड़ रहा जनसैलाब केंद्रीय ग्रामीण विकास, पंचायती राज एवं खान मंत्री लगातार कर रहे सभा

दाहोद (ईएमएस)। मध्य प्रदेश के ग्वालियर से सांसद व केंद्रीय ग्रामीण विकास, पंचायती राज एवं खान मंत्री गुजरात विधानसभा प्रचार में जबरदस्त भूमिका अदा कर रहे हैं। वे लगातार रैलियां कर रहे हैं जहां भारी जनमानस उमड़ रहा है। इसी तारतम्य में गुरुवा को दाहोद में चुनावी रैली की। उन्होंने भाजपा की मोदी सरकार के विकास कार्यों को लोगों के सामने रखा। इसके साथ ही 10 दिसंबर को वडोदरा में होने वाली मोदी की रैली की दृष्टि से वडोदरा जिला (ग्रामीण) की सभी विधानसभाओं की कोर कमेटी के साथ चर्चा की। तोमर ने आणंद में होने वाली मोदी की रैली की दृष्टि से भी आणंद जिले की सभी 7 विधानसभाओं की कोर कमेटी के साथ चर्चा की।

कपड़ा मार्केट में ग्राहकी तेज

वैवाहिक व मांगलिक आयोजन से कपड़ा की मांग बढ़ी

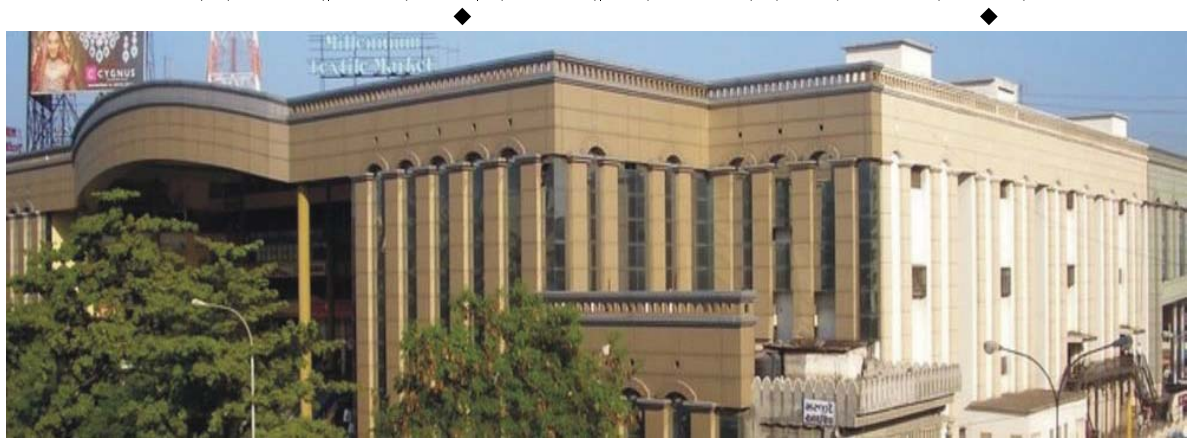

सूरत। राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, दिल्ली, महाराष्ट्र, गुजरात, दक्षिण भारत सहित देश के अन्य प्रदेशों में वैवाहिक व मांगलिक आयोजनों के चलते कपड़ा मार्केट में ग्राहकी तेज है। कपड़ा मार्केट बाहर से आने वाले ग्राहकों से गुलजार है। गुरूवार को कपड़ा मार्केट में ग्राहकों ने जमकर खरीदी की। ख्याहकी के बाद व्यापारी माल को ट्रांसपोर्ट में भ्भेजने के लिए ट्रांसपोर्टर से संपर्क साध रहे हैं। गोदाम में अधिक पार्सल आने से ट्रांसपोर्टर माल बाद में भ्भेजने के लिए कपड़ा व्यापारियों से कह रहें है। जबकि सूरत में नौ दिसंबर को होने वाले चुनाव को लेकर कपड़ा व्यापारी अपने काम-काज को छोड़कर चुनाव प्रचार के साथ अपने प्रत्याशी को विजई बनाने के लिए कोई कोर-कसर नहीं छोड़ रह हैं।

गुजरात समेत देशभर के नागरिक भाजपा सरकार से परेशान : आरपीएन सिंह

अहमदाबाद (ईएमएस)। कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता और पूर्व केन्द्रीय मंत्री आरपीएनसिंह ने भाजपा सरकार के शासन में गुजरात समेत देशभर के नागरिक अत्याचार और अन्याय से जूझ रहे हैं। लेकिन अब गुजरात और उसके बाद होनेवाले देश के चुनाव में भाजपा को घर बिठाने तथा अपने ऊपर हुए अत्याचार, अन्याय का जवाब देने का जनता ने फैसला कर लिया है।

अहमदाबाद में पत्रकार परिषद में आरपीएन सिंह ने कहा कि भाजपा को पता है विधानसभा चुनाव में उसकी हार तय है, इसके बावजूद वह 150 से ज्यादा सीटें जीतने का दावा कर गुजरात समेत देश की जनता को गुमराह कर रही है। उन्होंने कहा कि बिहार चुनाव के दौरान स्वतंत्र न्यूज एजेंसी की ओर से सर्वे किया था, जिसमें कांग्रेस अन्य राजनीतिक दलों के साथ गठबंधन कर जीत प्राप्त करेगी। बिहार चुनाव के नतीजे सर्वे सही साबित हुआ। उसी एजेंसी ने गुजरात में सर्वे किया। जिसमें पता चला कि भाजपा सरकार के जीएसटी और नोटबंदी से राज्य के काफी परेशान हुए हैं। व्यापार-धंधे ठप हो गए हैं, गरीब व मध्यम वर्ग के लोग बेरोजगार हो गए हैं। देश की गरीब जनता के लिए सबसे बड़ी समस्य शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार है। जो उपलब्ध कराने में मौजूदा भाजपा सरकार नाकाम रही है। जनता की समस्या दूर करने के बजाए भाजपा सरकार ने इस और बढ़ा दिया है। राज्य और देश में एक ही सरकार होने के बावजूद गुजरात की जनता की परेशानी दिन ब दिन बढ़ती जा रही है। भाजपा जनता के मुद्दों की बात करनेके बजाए तथ्यहीन बातें कर लोगों को गुमराह कर रही है। उन्होंने कहा कि गुजरात में स्कूलों का निजीकरण तेजी से बढ़ रहा है। राज्य में 86 प्रतिशत निजी स्कूलें हैं, जिसकी वजह से गरीब व मध्यम वर्ग के लोग अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा नहीं दिलवा पाते। भाजपा सरकार ने गरीब व मध्यम वर्ग के बच्चों को बेहतर शिक्षा उपलब्ध कराने की दिशा में कोई प्रयास नहीं किए। महंगी फीस को लेकर अभिभावक सड़कों पर उतर आए हैं। आरपीएन सिंह ने काह कि जीएसटी और नोटबंदी ने युवाओं का रोजगार छीनकर उन्हें बेरोजगार बना दिया। भाजपा सरकार से उन्होंने सवाल किया कि क्यों आखिर उसे 24 रुपए प्रति यूनिट बिजली निजी कंपनियों से खरीदनी पड़ रही है। प्रधानमंत्री मोदी ने राजकोट में अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा बनाने का ऐलान किया है। लेकिन राज्य में 100 किलोमीटर के अंतर में दो अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे कैसे हो सकता है।

मणिनगर सीट पर कांग्रेस का खूबसूरत दांव

युवा प्रत्याशी श्वेता बाइक कैंपेन से मचा रही हैं धूम

मणिनगर (ईएमएस)। पिछले दो दशक से गुजरात चुनाव में मणिनगर सीट हमेशा से चर्चा में रही है। मणिनगर वह सीट है, जहां से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी चुनाव लड़ते थे, जब वह गुजरात के मुख्यमंत्री थे। मणिनगर आज भी भाजपा का गढ़ है, लेकिन इस बार कांग्रेस ने बहुत ही खूबसूरत दांव खेला है। कांग्रेस ने मणिनगर मैनेजमेंट कंसल्टेंट श्वेता ब्रह्मभट्ट को टिकट दिया है।

श्वेता बड़े ही अनोखे अंदाज में मणिनगर में चुनाव प्रचार में जुटी हुई है। दिन में वह डोर टू डोर कैंपेन करती हैं और शाम को मणिनगर में बाइक कैंपेन करती हैं। मोटरसाइकिल पर चढ़कर अपने समर्थकों के साथ श्वेता मणिनगर की गलियों में अपने लिए वोट मांगती हैं। श्वेता ने कहा, वह बाइक के जरिए अपने क्षेत्र के युवाओं से ज यादा से ज्यादा जुड़ना चाहती हैं। गुजरात में 65 प्रतिशत युवा हैं और मणिनगर में 75 फीसदी। उन्होंने, हमारे पूरे कैंपेन की थीम भी नवसृजन यानी युवा जोश है। इसीलिए हम बाइक रैली निकालकर युवाओं तक पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं। 34 साल की श्वेता ब्रह्मभट्ट लंदन की यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्ट मिनिस्टर वेस्टमिंस्टर से पढ़ाई करके आई हैं। उन्होंने आईआईएम बेंगलुरु से पॉलिटिकल लीडरशिप का कोर्स भी किया है। श्वेता कहती हैं कि गुजरात में विकास की जो बात हो रही है, अगर आपको उसकी सच्चाई देखना हो तो केवल मणिनगर में घूम लीजिए। तो पता चल जाएगा कि कुछ भी नहीं हुआ। कांग्रेस के कई दिग्गज नेता श्वेता के लिए चुनाव प्रचार कर रहे हैं। श्वेता के पिता भी एक कांग्रेस नेता हैं।

राहुल गांधी अब 'पप्पू' नहीं रहे शिवसेना

मुंबई (ईएमएस)। शिवसेना ने कहा है कि गुजरात विधानसभा चुनाव ने कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी को एक नेता में तब्दील कर दिया है। उनका मंदिरों में जाना 'हिंदुत्व के लिए जीत' है। साथ ही उसने कहा कि राहुल गांधी अब 'पप्पू' नहीं रहे। भाजपा को बड़े मन से यह स्वीकार करना चाहिए। शिवसेना ने कहा कि गुजरात चुनाव के अंतिम चरण में पहुंचने के बाद पीएम मोदी ने आखिरकार कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी को एक 'मजबूत प्रतिद्वंदी' माना है।

शिवसेना ने साथ ही कहा कि जिस चुनाव में भाजपा अपनी जीत सुनिश्चित मान रही है।

जनेऊ धारण करने से कोई ब्राह्मण नहीं हो जाता, रावण भी पहनता था : परेश रावल

वडोदरा (ईएमएस)। भाजपा सांसद परेश रावल ने जनेऊ धारण कर लेने से कोई ब्राह्मण नहीं हो जाता। लंकापति रावण ने भी जनेऊ धारण किया, परंतु उसके कर्म खराब थे।

वडोदरा में जनसभा को संबोधित करते हुए परेश रावल ने कहा कि पैरों तले जमीन खिसकते देख कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी सरदार पटेल की जन्मभूमि करमसद जाते हैं। परेश रावल ने सवाल किया कि क्या पहले कभी राहुल गांधी करमसद गए थे। कांग्रेस ने कभी सरदार पटेल को महत्व नहीं दिया। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहनसिंह को अच्छा व्यक्ति बताया, परंतु कांग्रेस को खराब कहा और कहा कि यदि आपका पुत्र बोल नहीं पाता हो तो मोदी की मन्नत रखना। मोदी को देख मनमोहनसिंह भी बोलने लगे हैं। परेश रावल ने कांग्रेस को चुनौती देते हुए कहा कि वह कांग्रेस शासित राज्यों से गुजरात का मुकाबला कर सके ऐसा एक राज्य बता दे तो मैं दो बाप का। उन्होंने कहा कि मनमोहनसिंह अच्छे व्यक्ति हैं लेकिन गुजरात में आकर नर्मदा डेम पर दरवाजे लगाने के बारे में उन्हें पेशकश नहीं मिली होने का कहकर झूठ बोल रहे हैं। राहुल गांधी के सोमनाथ मंदिर जाने के मुद्दे पर परेश रावल ने कहा कि मटन खाने से ऊर्दू नहीं आती और जनेऊ पहनने से कोई ब्राह्मण नहीं हो जाता।

पास नेता पटेल हार्दिक के पांच और वीडियो यू ट्यूब पर जारी

अहमदाबाद (ईएमएस)। गुजरात विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के समर्थन में धुंआधार प्रचार कर रहे पास नेता हार्दिक पटेल के खिलाफ पांच नए वीडियो यू ट्यूब पर वायरल किए गए हैं। कुछ समय पहले हार्दिक पटेल की कथित सेक्स सीडी जारी की गई थी। हांलाकि सीडी जारी होने के बावजूद हार्दिक पटेल की रैली पर इसका कोई असर नहीं हुआ और आज भी उनकी सभाओं में बड़ी संख्या में लोग जमा हो रहे हैं। जिससे साफ है कि सीडी कांड के बाद भी लोगों पर हार्दिक पटेल को लेकर कोई प्रतिकूल

असर नहीं है। गुजरात विधानसभा चुनाव के पहले चरण के चुनाव के आडे दो दिन रह गए हैं और आज फिर एक बार हार्दिक पटेल के वीडियो यू ट्यूब पर जारी किए गए हैं। इस बार एक-दो नहीं बल्कि पांच-पांच वीडियो जारी किए गए हैं। जिसमें पास कन्वीनरों के साथ युवती भी नजर आ रही है। यू ट्यूब पर ये वीडियो हार्दिक पटेल एन्ड गैंग के नाम से जारी किए गए हैं। इन वीडियों में भी हार्दिक पटेल एक युवती के साथ नजर आ रहे हैं। कुछ वीडियो अंधेरे के हैं। गौरतलब है कुछ दिन पहले जारी कथित सेक्स सीडी को लेकर हार्दिक पटेल ने इसे भाजपा की गंदी राजनीति करार दिया था। हार्दिक ने कहा था कि लोग 22 साल के लड़के के नहीं बल्कि भाजपा सरकार द्वारा 22 साल में किए गए विकास को देखना चाहते हैं।

डभोई सीट पर कोई भी दल लगातार दो बार नहीं जीत पाया

वडोदरा। गुजतरात विधानसभा की 182 सीटों में से वडोदरा जिले की डभोई सीट सबसे अनोखी है। मतदान का पेटेंट और मतदाताओं का मिजाज देखते हुए इस बार डभोई सीट पर परिणाम लगभग तय है। इस सीट पर 1962 से लेकर 2012 तक विधानसभा के सभी चुनावों में किसी एक दल की दूसरी बार जीत नहीं हुई है। पिछले साल इस सीट से भाजपा जीती थी, तो इस बार इस सीट पर कांग्रेस अपनी जीत का परचम लहराएगी, ऐसा विश्वास किया जा रहा है।

डभोई सीट का इतिहास और विजयी प्रत्याशी ?

2012	बालकृष्ण पटेल	भाजपा
2007	सिद्धार्थ पटेल	कोंग्रेस
2002	चंद्रकान्त पटेल	भाजपा
1998	सिद्धार्थ पटेल	कोंग्रेस
1995	करणसिंह राज	भाजपा
1990	उमाकांत जोषी	निर्दलीय
1985	गिरी राजकुमारी	कोंग्रेस
1980	उमाकांत जोशी	जनता पार्टी
1975	अंबालाल पटेल	एनसीओ
1972	कालिदास चौहाण	कोंग्रेस
1967	एन.आई.पुरोहित स्वतंत्र	पार्टी
1962	भानुबेन पटेल	कोंग्रेस

एक दल या एक ही प्रत्याशी लगातार दो बार कभी नहीं जीता

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक सुरेश मौर्या द्वारा तासीलोक पब्लिकेशन 152,153 श्री राम इंडस्ट्रीयल एरिया पांडेसरा सूरत 394210 से मुद्रत, एवं 4 ओ-ब्लाक आगम नवकार कॉम्पलेक्ष सचीन रेल्वे स्टेश के पास, सूरत, जि. सूरत, गुजरात से प्रकाशित, **संपादक :- सुरेश मौर्या** फोन नं. (9879141480) **Tc.No. : GUJHIN00722**, E-mail: krantisamay@gmail.com